आदाबे मुबाशरत

हिन्दी अनुवाद

Islamic Etiquettes of Sex

लेखक
डॉ. आफ़ताब अहमद शाह
होम्योपैथ (R.M.P.)

अनुवादक
डॉ. जावेद अख़्तर (R.M.P.)

आदाबे मुबाशरत

(हिन्दी अनुवाद)

Islamic Etiquettes of Sex

लेखक
डा० आफ़ताब अहमद शाह,
होम्योपैथ (R.M.P.)

अनुवादक
डा० जावेद अख़्तर (R.M.P.)

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

आदाबे मुबाशरत

लेखक

डा० आफ़ताब अहमद शाह

अनुवादक

डा० जावेद अख़्तर

संयोजक

नासिर ख़ान

Âdâb-e-Mubashrat

Author:
Dr. Aftab Ahmad Shah

Translated by:
Dr. Javed Akhtar

Edition: **2015**

Pages: **96**

प्रकाशक

2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Ph.: 011-23289786, 23289159 Fax: 011-23279998
E-mail: faridexport@gmail.com | Website: faridexport.com

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

विषय सूची

भूमिका

इस पुस्तक के लिखने की ज़रूरत क्यों हुई ?

मैं एक होम्योपैथिक डाक्टर हूं। हर एक होमैयो डाक्टर को किसी रोगी की उचित दवा तलाश करने के लिए बहुत कुछ पूछताछ करनी पड़ती है इसी पूछताछ से यह बात मेरी जानकारी में आई कि कुछ लोगों ने अपनी पत्नियों से मासिक धर्म के दिनों में भी सम्भोग किया, जिससे उनके लिंग पर दाने आदि पैदा हो गये और कुछ के शरीर पर अन्य प्रकार के चर्म रोग उत्पन्न हुए। कुछ लोगों ने बाज़ारी कोक-शास्त्रों में बताए गए आसन प्रयोग करके अपनी पत्नियों को परेशानी में डाल दिया और कुछ दुष्टों ने अपनी पत्नियों के पाखाने के स्थान से अपनी काम वासना की पूर्ति की। ऐसा करने वालों में मुसलमान भी थे और अन्य धर्मों के लोग भी। जब मैंने मुसलमान मरीज़ों से यह पूछा कि क्या तुम को इस बात का पता न था कि कुरान में हैज (मासिक धर्म) की हालत में संभोग करने को मना किया है और ऐसा करने को हराम बताया है तो उनका जवाब था कि हमें इस बात का पता न था।

इन बातों से मेरा ध्यान इस तरफ़ गया कि इस्लाम धर्म में जब इन्सानी ज़िन्दगी की हर ज़रूरत को पूरा करने का तरीक़ा और नियम बताया गया है तो इस संभोग विषय पर भी ज़रूर कुछ न कुछ आदेश होंगे जिसका हर मुसलमान

को मालूम होना ज़रूरी है। इस लिए मैंने इस विषय पर पुस्तकों की तलाश की तो पता चला कि केवल इस विषय पर अलग से अभी तक कोई पुस्तक कुरान व हदीस की रोशनी में नहीं लिखी गई है। तब मैंने हज़रत मुहम्मद साहब (उन पर अल्लाह की सलामती हो) के घरेलू जीवन से सम्बन्धित हदीसों की तलाश की तो इस विषय पर बहुत फायदे की बातें मालूम हुई, जिनको इस पुस्तक में लिख रहा हूं और आशा करता हूं कि मेरी यह पुस्तक ऐसे लोगों के लिए बड़ी लाभदायाक होगी जो अपनी ज़िन्दगी खुदा व रसूल के हुक्म के मुताबिक गुज़ारना चाहते हैं और ऐसे नौजवानों के लिए अत्याधिक लाभदायक होगी जो इस विषय में कुछ जानना तो चाहते हैं मगर शर्म व लज्जा के कारण उलमा से पूछते नहीं हैं, हालांकि हज़रत मुहम्मद साहब (उन पर सलामती हो) के ज़मानें में तो स्त्रियां भी विवाहित जीवन की सब बातें पूछ लिया करती थीं जिससे मालूम हुआ कि इन बातों को पूछना और बताना कोई बेशर्मी की बात नहीं हैं।

मैं इस बात को पूर्ण विश्वास के साथ लिख रहा हूं कि अगर मियां-बीवी के गुप्त सम्बन्ध भी इस्लाम धर्म की शिक्षा के अनुसार हों तो उनसे पैदा होने वाली औलाद (सन्तान) भी नेक सुआलेह और तन्दुरूस्त होगी। और वह खुद भी गन्दे रोगों से बचे रहेंगे।

डा० आफ़ताब अहमद
होम्योपैथ
इटावा

प्राक्कथन

Dr. Maulana Fazlur Rehman Nadvi
M.A. Ph. D. (Reader)
Department of Islamic Studies
Aligarh Muslim University, Aligarh

डा0 आफ़्ताब अहमद शाह होम्योपैथिक इलाज का बड़ा तर्जुबा रखते हैं और मरीजों के साथ दिली हमदर्दी उनके चिकित्सालय की विशेषता है। उन्होंने मरीज़ों की बीमारी की तशख़ीस में कामयाबी हासिल की है और इस पुस्तक में स्त्री पुरुष के गुप्त सम्बन्धों के विषय में अपनी जानकारी व तर्जुबात का निचोड़ रख दिया है। जब यह बात आप की जानकारी में आई कि आज के मुसलमान सम्भोग के विषय में कुरान हदीस के आदेश न जानने के कारण उनका उल्लंघन करके एक तरफ़ तो अपने आपको खबीस Vineral बीमारियों में मुबतिला कर लतें हैं, दूसरी तरफ़ गुनाह के मुरतकिब भी होते हैं। इस लिए इन तमाम बुराईयों से बचाव के लिए इस पुस्तक द्वारा ज़रूरी जानकारी दी है।

इस पुस्तक में जो निर्देश दिए गए हैं वह ऐसे हैं कि उनके अपनाने से स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा और घरेलू ज़िन्दगी का आनन्द भी प्राप्त होगा।

डा० शाह ने अपने तजुरबों के आधार पर मर्दाना कमज़ोरी दूर करने के लिए आम इश्तिहारी (विज्ञापन) दवाओं के मुजिर (हानिकारक) असरात से भी बाख़बर किया है। बकौल उनके यह दवायें नशे वाली चीज़ों (अफ़ीम, धतूरा आदि) से भरपूर होने के कारण ख़तरये ईमान है और ख़तरये जान व माल भी

हो सकती हैं।

डा० साहब का एक सच्चे मुसलमान की हैसियत से मशवरा है कि अच्छी गिज़ा, व स्वास्थ्य नियमों के पालन और शरीयते, इस्लामी के आदेशों की पैरवी से इन्सान पूरी ताकत हासिल कर सकता है और मजबूरी के दर्जे में किसी अच्छे ईमानदार हकीम से इलाज कराया जाये।

मुझे उम्मीद है कि यह पुस्तक लोग शौक से पढ़ेगे और फ़ायदा उठाएंगे।

मुहम्मद फज़लुर रहमान नदवी
सरसय्यद नगर–अलीगढ़

हैज़ (मासिक धर्म) व नफ़ास (बच्चा पैदा होने के बाद का गन्दा ख़ून) की हालत में सम्भोग की मुमानियत (मनाही)

इस दुनिया के रचयिता अल्लाह ने स्त्री व पुरुष के अन्दर एक दूसरे के मिलन व मुहब्बत से आननन्द प्राप्त करने की इच्छा रखी है, उसे पूरा करने के लिए निकाह (विवाह) का तरीका बताया है, और इसी लिए निकाह हज़रत मुहम्मद स० (उन पर ख़ुदा की सलामती हो) की निहायत अहम सुन्नत है। इसके जरिये इन्सान ज़िना व्यभिचार (अवैध सम्बन्धों) से बचता है। इसी कारण निकाह को आधा ईमान भी कहा गया है। निकाह कर लेने से जहां इन्सान

हरामकारी से बचता है, वहीं उसको बदन की सेहत, दिल का चैन व सकून-मुहब्बत और एक दूसरे की सच्ची हमदर्दी आदि फायदे हासिल होते हैं।

निकाह व बिदा के बाद जब पति-पत्नी तन्हाई (सुहागरात) में मिलते हैं तो आम तौर पर पुरुष में काम वासना बड़ी तेजी से उभरती है और कोई-कोई पुरुष इसमें बड़ी जल्दी करते हैं और स्त्री पर बुरी तरह से भूके जानवर की तरह टूट पड़ते हैं। कभी ऐसा भी होता है कि स्त्री मासिक खून आने की हालत में होती है और वह मना भी करती है मगर खुदा के हुक्म की जानकारी न होने के कारण ऐसी स्थति में भी सम्भोग कर लेते हैं जबकि कुरान ने खुले शब्दों में हैज की हालत में सम्भोग करने से रोका और हराम बताया है।

وَاعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ

अनुवाद :- "हैज की हालत में औरत से अलग-थलग रहो"

कुरान के इस आदेश के बारे में Medical Science (आधुनिक चिकित्सा पद्धति) ने इस बात को स्वीकार किया है कि इस मासिक व गन्दे स्राव में एक प्रकार का विषैला माद्दा (पदार्थ) होता है, जिसके शरीर के अन्दर रह जाने से स्वास्थ को हानि पहुँचती है। इस लिए मासिक धर्म अवस्था में सम्भोग करना हानिकारक होता है और कभी-कभी स्त्री का मासिक स्राव रुक जाता है जिससे गर्भाशय में सूजन, खुजली आदि पैदा हो जाती है और AIDS नाम की बड़ी खतरनाक बीमारी भी इसी प्रकार की अन्य दूसरी बेहूदी हरकतों का नतीजा है।

कुर्बान जाइए शरीयते मुहम्मदी पर कि जिसने हमें खुदा के आदेश द्वारा

हर बुरे व नुकसान पहुंचाने वाले कामों से रोका, जिनसे लोगों को तरह-तरह की बीमारियां सूजाक, आतशक वग़ैरा पैदा होती है जिनकी तकलीफ़ न केवल स्वयम को बल्कि उनकी संतानों को भी भुगतना पड़ती है और कभी स्त्री में भी बांझपन पैदा हो जाता है, या औलाद कोढ़ी हो जाती है।

कुछ फुकाहा ने इस आदेश के तोड़ने वाले पर हदीस के अनुसार कफ़्फ़ारा (दंड) रखा है जिस किसी से कामवासना के दबाव से हैज की हालत में सम्भोग करने का गुनाह हो जावे तो उसे एक या आधा दीनार बतौर कफ़्फ़ारा सदका (दान) करना चाहिए।

हज़रत इमाम अबूहनीफ़ा-इमाम मालिक और इमाम शाफ़ई रहिम0 के नज़दीक कफ़्फ़ारा अदा करना वाजिब (लाज़मी) नहीं है। अलबत्ता इस्तग़फ़ार (माफ़ी-क्षमा चाहना) करना वाजिब है और इमाम अहमद रहिम0 का कहना है कि कफ़्फ़ारा अदा करे। अगर एक दीनार न दे सके तो आधा दीनार अदा करे।

मासिक धर्म अवस्था में साथ लेटने की इजाज़त

इस्लाम धर्म के आदेश बहुत सरल और प्राकृतिक हैं और उनमें कोई तंगी व परेशानी नहीं है। कुछ धर्मों में स्त्री को मासिक धर्म की हालत में इस कदर अपवित्र समझा जाता है कि उसके हाथ का खाना भी नहीं खाते हैं, और अलग लिटाते हैं मगर इस्लाम धर्म में स्त्री के साथ सम्भोग को छोड़ कर बाकी

पूरे शरीर से आनन्द प्राप्त करने की इजाज़त है साथ लेटने-चुम्बन व आंलिंगन की पूरी इजाज़त है मगर स्त्री के नाभि से नीचे घुटनों तक का भाग नंगा न करें इतना भाग अवश्य पाजामे आदि कपड़े में छुपा रहे। साथ में लेटना एक साथ खाना पीना भी मना नहीं है।

मासिक धर्म के पश्चात् कब सम्भोग किया जाए ?

जब मासिक धर्म का खून आना बन्द हो जाए और स्त्री अपनी योनि को धोले या वुज़ू करले या स्नान करले तब उससे सम्भोग करना उचित होगा इस लिए कि कुरान में तहारत का शब्द प्रयोग किया गया है जो इन तीनों हालतों पर लागू होता है।

इस मसले में उलमा की राय अलग-2 हैं इमाम मालिक व इमाम शाफई और इमाम अहमद रहि0 की राय में स्त्री जब तक गुस्ल (स्नान) न करले या किसी उज्र (मजबूरी) के कारण बजाय गुस्ल के तयम्मुम न करले सम्भोग करना जायज़ नहीं है।

इमाम अबू हनीफ़ा रहि० के यहां मासिक धर्म की अवस्था कम से कम तीन दिन और ज़्यादा से ज़्यादा दस दिन है। अगर खून दस दिन से कम में बन्द हो जाए तो सम्भोग उस वक़्त जायज है, जब वह गुस्ल करले या एक नमाज का वक़्त गुज़र जाए तो सम्भोग जायज है और अगर खून पूरे दस दिन के बाद बन्द हो तो गुस्ल से पहले भी जायज़ है लेकिन मुस्तहब (बेहतर) यह है कि

स्त्री के गुस्ल कर लेने के बाद ही सम्भोग किया जाय और इमाम ग़िज़ाली रहिम० का कहना है कि मासिक धर्म का समय समाप्त होने के बाद स्नान से पहले सम्भोग न करें कि कुरान से इसकी हुरमत साबित है।

चूंकि हैज़ आने के दिनों में औरतें स्नान करना बन्द कर देती हैं इसलिए अक़्ले सलीम (Common Sence) का तकाज़ा भी यही है कि गुस्ल के बाद ही सम्भोग किया जावे ताकि स्नान न करने के कारण स्त्री के शरीर की बदबू बुरी न मालूम हो।

सम्भोग करने का प्राकृतिक (Natural) व कुरानी तरीका

इस्लाम धर्म के सारे नियम प्राकृतिक हैं अतः सम्भोग का भी प्राकृतिक तरीका यह है कि स्त्री नीचे और पुरुष ऊपर रहे इसी लिए सारे जानवर इसी आसन का प्रयोग करते हैं। कुरान शरीफ में भी यही तरीका निहायत लतीफ (बारीक) इशारे में समझाया गया है فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا ٥

अनुवाद :– जब पुरुष ने स्त्री को ढांप लिया तो उसको हल्का सा हमल रह गया।

अतः इसकी यही सूरत हो सकती है कि स्त्री चित लेटे और पुरुष उसके ऊपर पट लेटे ताकि औरत का शरीर मर्द के शरीर से ढक जाए।

इसी तरीके में ज़्यादा राहत और आसानी है औरत को भी परेशानी

नहीं होती और गर्भ स्थापना के लिए भी यही तरीका मुफ़ीद है।

सम्भोग के दूसरे तरीक़े

एक बार एक सहाबी ने अपनी स्त्री से पीछे की तरफ़ से संगति कर ली बाद में ख्याल हुआ कि कहीं ऐसा करना अनुचित न हो वह रसूल करीम (आप पर सलामती हो) कि खिदमत में हाज़िर हुए और कहा "रात मुझसे यह ग़लती हो गई कि मैंने अपनी स्त्री से पीछे की तरफ़ से संगत कर ली" यह सुनकर आपने कोई जवाब नहीं दिया यहां तक कि अल्लाह की तरफ़ से कुरान की यह आयत नाज़िल (उतरी) हुई।

نِسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ

"निसाउ कुम हरसुललकुम फातू हर सकुम"
अन्ना शिएतुम (सूरः बकरा आयत 223)

अनुवाद :- तुम्हारी पत्नियां तुम्हारे लिए खेत के समान हैं सो अपने खेत में जिस तरफ़ से होकर चाहो, आओ।

अल्लाह के रसूल ने इसकी तश्रीह (Explain) की और बताया कि सम्भोग तो केवल अगले हिस्सा फ़र्ज़ (योनि) में ही होना चाहिए चाहे आगे की तरफ़ से हो या पीछे की तरफ़ से। इस आयत की तफ़सीर में हज़रत थानवी रहि0 ने बयानुल कुरान में यूं लिखा है।

"तुम्हारी पत्नियां तुम्हारे लिए खेत के समान हैं कि जिसमें वीर्य बजाय बीज के और बच्चा बजाय पैदावार के है सो अपने खेत में जिस तरफ़ से होकर

चाहो आओ, और जिस तरह खेतों में इजाज़त है उसी तरह बीवियों के पास पाकी की हालत में हर तरफ़ से आने की इजाज़त है चाहे करवट से हो या पीछे से या आगे बैठ कर हो या ऊपर नीचे लेट कर जिस शक्ल से हो मगर आना हो केवल खेत के अन्दर कि वह आगे की ही खास जगह है पीछे की जगह खेत के समान नहीं है उसमें सम्भोग न हो।

अप्राकृतिक (Un-natural) तरीकों से सम्भोग की मनाही

जिस तरह मासिक धर्म की हालत में स्त्री से सम्भोग हराम है उसी तरह औरत के शौच स्थान (गुदा) से अपनी काम वासना मिटाना भी हराम है। रसूल करीम (उन पर सलामती हो) ने स्पष्ट रूप से इस कुकर्म को मना किया है हज़रत खजीमा बिन साबित (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने एक लम्बी हदीस बयान की है जिसके अन्त में यह है कि औरतों के पिछले हिस्से में सम्भोग न करें। जो व्यक्ति अपनी स्त्री के शौच के स्थान में अपना लिंग प्रवेश करेगा अल्लाह तआला उसको करम (दया) की निगाह से न देखेंगे।

जो लोग अपनी स्त्रियों के पिछले भाग में सम्भोग करते हैं वह मलऊन हैं (अबूदाऊद)।

इमाम ग़िज़ाली रहिमतुल्ला अलैहि ने लिखा है कि पीछे की तरफ़ से सम्भोग उचित नहीं बल्कि इसकी हुरमत हैज की हालत में सम्भोग करने से ज़्यादा सख्त है क्यों कि इसमें स्त्री को हमेशा तकलीफ़ होती है।

जल्क़ (हस्त मैथुन) अर्थात हाथ से वीर्य निकालने की मनाही

उम्दतुल अहकाम (पुस्तक) में यह लिखा है कि हुजूरे नबी करीम (उन पर सलामती हो) का इर्शाद है कि बहुत बुरे हैं वे लोग जो तन्हा खायें और अपनी बांदियों को मारें और अपनी बख्शीश (दान पुण्य) बन्द कर दें और निकाह करें हाथ से। अर्थात हस्त मैथुन द्वारा अपना वीर्य निकालें।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से एक आदमी ने पूछा कि मैं जवान हूं और बीवी (पत्नी) नहीं रखता हूं बहुदा मठोलों (मैथुन) से अपनी काम वासना की पूर्ति कर लेता हूं। इसमें कुछ गुनाह (पाप) होता है या नहीं-हज़रते इब्ने अब्बास ने उसकी तरफ़ से मूंह फेर लिया और फरमाया छी-छी तेरा लौंडी से निकाह कर लेना इस हरकत से बेहतर है इससे मालूम हुआ कि हस्त मैथुन बहुत बुरा काम है। मुश्त ज़नी हुसूले शहवत के लिये हराम है फ़तावा रहीमियां जिल्द 4 सफ़ा 276

दुल्हन के घर में आने के समय की दुआ

निकाह और बिदा के बाद जब दुल्हन घर में आए तो दुल्हा को चाहिए कि दुल्हन का हाथ पकड़ कर और किसी ने लिखा है दुल्हन की पेशानी (माथे) के बाल पकड़ कर यह दुआ करे।

اللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِهَا وَخَيْرِ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهَا

अनुवाद :– ऐ अल्लाह में आपसे इसकी भलाई और इसकी भली आदतों की भलाई का सवाल करता हूं और इसकी बुराई और बुरी आदतों की बुराई से पनाह मांगता हूं। وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا ط

इस दुआ की बरकत यह है कि अल्लाह इस औरत से बुराई दूर कर देगा और घर में इस औरत की नेकी फैलाएगा।

नोट :– अगर दुआ को अरबी में प पढ़ सकें तो अनुवाद पढ़ लें।

सुहाग रात के आदाब

जिस समय पति-पत्नी तन्हाई में मिलें तो सम्भोग कार्य में जल्दी न करें और धीरज से काम लें। हुजूर नबी करीम (सलामती हो उन पर) ने यह भी फ़रमाया है कि कोई पुरुष जानवरों की तरह अपनी स्त्री पर न टूट पड़े बल्कि उसको चाहिए कि बोसो कनार (चुम्बन छेड़ छाड़ आदि) और आहिस्ता बातचीत से आमादा करें और जब रग़बत खूब हो तो सम्भोग से पहले बिस्मिल्ला के साथ तीन बार सूरे इख़्लास और सूरे फ़लक़ व सूरे नास पढ़ने के बाद यह दुआ पढ़कर सम्भोग शुरू करें।

بِسْمِ اللهِ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا

अनुवाद :– अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं। ए अल्लाह हम दोनों को शैतान से दूर रख और जो कुछ लड़का लड़की हमें नसीब करे उसको भी शैतान से दूर रखिए।

फिर जिस समय वीर्य निकले को हो तो दिल ही दिल में यह दुआ पढ़े।

اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ لِلشَّيْطٰنِ فِيْمَا رَزَقْتَنِيْ نَصِيْبًا ۝

अनुवाद :- ऐ अल्लाह न कीजिए कुछ शैतान के लिए इस बच्चे में जो आप हमें नसीब करें।

अगर इस सम्भोग से गर्भ रह जाय और बच्चा पैदा हो तो शैतान कुछ नुकसान न पहुंचा सकेगा। शेख़ अब्दुल हक साहब रहमत उल्ला अलैहि कहते हैं कि इससे मालूम हुआ कि अगर सम्भोग के समय यह दुआ न पढ़ें तो शैतान का दख़ल हो जाता है और इसी कारण औलाद में फ़िसाद व तबाहकारी होती है।

सम्भोग के समय स्त्री-पुरुष बिल्कुल जानवरों की तरह नंगे न हो जावें बिल्कुल नंगे होकर सम्भोग करने से औलाद बेहया (लज्जाहीन) पैदा होती है और हुज़ूर नबी करीम ख़ुद (स्वयं) और अपनी पत्नी को सर से पैर तक कपड़े से ढांप लिया करते थे और आवाज़ पस्त धीमी करते थे और पत्नी से फ़रमाते थे कि विकार (सभ्यता) के साथ रहो।

जब पुरुष का पतन हो जावे तो स्त्री से तुरन्त अलैहदा न हों बल्कि उसी तरह कुछ देर लेटा रहे ताकि स्त्री की इच्छा भी पूरी हो जावे क्यों कि स्त्री को पतन देर में होता है। सम्भोग कार्य से निपटने के बाद स्त्री व पुरुष दोनों अलग-अलग कपड़ों से अपने अपने गुप्त अंगों को पोंछ कर अलैहदा हों। एक ही कपड़े से दोनों अपना शरीर न पोंछें।

सम्भोग के बाद पेशाब करना

शरअतुल इस्लाम पुस्तक में लिखा है कि सम्भोग से निपटने के बाद स्त्री व पुरुष दोनों को पेशाब कर लेना चाहिए नहीं तो किसी लाइलाज बीमारी में फंस जायेंगे। यूनानी व वैदिक पुस्तकों में लिखा है कि किसी समय अगर वीर्य का कोई कतरा (बूंद) पेशाब की नली में अटका रह जाता है तो वह पेशाब की नली में ज़ख़्म अथवा सूजन पैदा कर देता है।

सम्भोग के बाद गुप्त अंगों का धोना

फ़कीह अबुललैस समरकन्दी ने लिखा है कि सम्भोग व मिलन के बाद गुप्त अंग को धो लेने से बदन तन्दुरुस्त रहता है परन्तु सम्भोग के तुरन्त बाद ठंडे पानी से न धोयें। ऐसा करने से बुखार आ जाने का डर है। इतनी देर रुक कर धोयें कि बदन की गर्मी जो सम्भोग के समय बढ़ जाती है अपनी असली हालत पर आ जाए। हज़रत अली (अल्लाह उनसे राज़ी हो) का कहना है कि सम्भोग के बाद पेशाब ज़रूर कर लें नहीं तो दर्द ला दवा पैदा हो सकता है। गुप्त अंगों को हलके गर्म पानी से धोना बदन को सही रखता है और अगर गर्म पानी न हो तो थोड़ी देर के बाद ठंडे पानी से धोने में कोई हर्ज नहीं।

सुहाग रात की बातें दूसरों को बताने से मनाही

आम तौर पर सुहाग रात की बातें दुल्हा से उसके दोस्त और दुल्हन से उसकी सहेलियां पूछती हैं और वह मज़े ले लेकर सुनाई व सुनी जाती हैं मगर हुजूर नबी करीम (उन पर अल्लाह की सलामती हो) ने मियां बीवी की तन्हाई की बातें दोस्तों व सहेलियों से बयान करने को नापसन्द किया है और बुरा बताया है। ऐसा करना बेशर्मी का जाहिलाना तरीका है।

नापाकी (अपवित्रता) हालत में सम्भोग की मनाही

इस्लाम धर्म में सफाई का बड़ा महत्व है और नापाक रहना भी गुनाह में शुमार होता है। अतः नापाकी की हालत में सम्भोग करने को मना किया गया है। इसी तरह एक बार सम्भोग करने के बाद दुबारा फिर इच्छा हो तो गुस्ल (स्नान) के बाद ऐसा करना अफ़ज़ल है और अगर गुस्ल न कर सकें तो वुजू कर लें। अगर एहतलाम (स्वप्न्दोष) हो जावे तब भी ऐसा करें।

सम्भोग के तुरन्त बाद पानी न पियें

हकीमों (वैद्यों) का कहना है कि सम्भोग के तुरन्त बाद पानी नहीं पीना चाहिए। ऐसा करने से उन्नफ़ुस यानी दमें का रोग पैदा हो जाता है इसी लिए भरे पेट की हालत में सम्भोग को मना किया गया है क्योंकि जब पेट भरा होता है तो सम्भोग क्रिया की गर्मी में खुश्की पैदा होती है और पानी पीने की इच्छा होती है।

खड़े होकर सम्भोग करने की मनाही

तिब्बे नबवी में लिखा है कि खड़े होकर सम्भोग करने से बदन दुबला व कमज़ोर हो जाता है और भरा पेट होने की हालत में संगत करने से औलाद कुन्द ज़ेहन (मूर्ख) पैदा होती है। यूनानी हकीमों (वैद्यों) ने लिखा है कि खड़े होकर संगत करने से रअशा (शरीर हिलने) की बीमारी पैदा हो जाती है।

संगत के समय स्त्री की योनि देखने की मनाही

शिरअतुल इस्लाम (पुस्तक) में लिखा है कि संगत के समय स्त्री की शर्मगाह (योनि) को न देखें क्यों कि अन्देशा है कि औलाद अन्धी पैदा न हो।

मसले के अनुसार अगरचे शर्मगाह को देखना मुबाह (जायज़) है और

स्त्री पुरुष एक दूसरे के शरीर के हर भाग को देख सकते हैं मगर उलमा ने लिखा है कि शर्मगाह देखने से नज़र कमज़ोर हो जाती है। अतः बिला ज़रूरत ऐसा न करें।

सुहबत (संगत) के समय बातों की मनाही

फकीह अबुललैस ने अपनी पुस्तक बुसतान में लिखा है कि संगत के समय ज़्यादा बातें न की जाएं ऐसा करने से अन्देशा है कि बच्चा गूंगा पैदा हो।

आंखें दुखने की हालत में संगत करने की मनाही

जामे कबीर (पुस्तक) में हुज़ूर की बीवी हज़रत उम्मे सलमा (अल्लाह उनसे राज़ी हुआ) से रिवायत (बयान) किया है कि जब किसी बीवी की आंखें दुखने लगती थीं तो रसूलुल्लाह (उन पर सलामती हो) उससे संगत न करते थे, जब तक कि तन्दुरुस्त न हो जावे।

इस हदीस पाक से यह इशारा मिलता है कि अगर पत्नी किसी दुख बीमारी की हालत में हो तो उसकी सेहत व इच्छा का अन्दाज़ा किए बग़ैर संगत करना मुनासिब न होगा। अक़्ल का तकाज़ा भी यही है कि बीमारी की हालत में संगत करने से बचा जावे क्योंकि जब तक दोनों तरफ़ चाहत न हो तो संगत

में आनन्द की प्राप्ति नहीं होती है केवल पुरुष की हविस पूरी हो जाती है।

सम्भोग के लिए उचित समय

फ़कीह् अबुललैस ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि सम्भोग के लिए सबसे बेहतर समय रात का आखिरी हिस्सा है क्यों कि शुरू रात में पेट भरा होता है।

हज़रत आयशा (अल्लाह उनसे राज़ी हुआ) जो हुजूर नबी करीम (उन पर सलामती हो) की बीवी हैं के हवाले से हज़रत इमाम गिजाली रहिम0 ने अपनी पुस्तक अहयाउलउलूम में लिखा है कि पैगम्बरे खुदा (उन नर सलामती हो) जब अन्तिम रात में वितर की नमाज़ पढ़ चुकते तो अगर आपको बीवी की हाजत (ज़रूरत) होती तो उन से मिलते और नहीं तो नमाज की जगह लेट जाते यहां तक हजरत बिलाल (अल्लाह उनसे राज़ी हुआ) आप को सुबह की नमाज़ की इत्तला देते। इमाम गिजाली की राय में शुरू रात में संगत करना इस ख्याल से मकरूह है कि फिर तमाम रात नापाकी की हालत में सोना पड़ेगा।

तिब्बे नबवी (पुस्तक) में भी भरे पेट पर संगत न करने को लिखा है क्योंकि रात के प्रथम भाग में पेट खाने से भरा होता है। यह सब स्वास्थ्य सम्बन्धी सलाह मशवरे की बातें हैं वैसे शरीयत की रु से रात व दिन में जब जी चाहे हर समय इजाज़त है।

इस पुस्तक के रचयिता का मशवरा-

अगर किसी पुरुष की काम वासना इतनी अधिक हो कि वह अन्तिम रात या आधी रात का इन्तज़ार न कर सके तो उसको चाहिए कि रात का खाना ज़रा जल्दी यानी शाम को ही खाले और वह भी भर पेट न खाये ताकि शुरु रात में संगत के समय उसका पेट पूरा भरा न हो।

संगत के समय के कुछ आदाब (नियम) संक्षेप में

1- स्त्री पुरुष दोनों पाक (पवित्र) और बावुज़ू हों।

2- मुस्तहिब यह है कि बिस्मिल्लाह पढ़ कर शुरू करें। अगर शुरू में भूल जायें तो याद आने पर बाद में पढ़ लें।

3- संगत से पहले खुश्बू (सुगन्घ) का स्तेमाल हुज़ूर से साबित है।

4- हर प्रकार की बदबू चाहे वह शरीर के मैले कुचैले होने की वजह से हो या तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट के कारण हो स्त्री की इच्छा को नफ़रत (घृणा) में बदल देती है।

5- संगत के समय किब्ले की तरफ़ मुंह न हो जिस तरह पाखाना पेशाब करते समय इसका ख़्याल रखते हैं।

6- संगत के समय स्त्री-पुरुष बिल्कुल नंगे न हों, चादर से शरीर को छुपाये रहें।

7- पतन के बाद पुरुष शीघ्र ही स्त्री से अलैहदा न हो जाये जब तक कि स्त्री का भी पतन न हो जावे।

8- जब पतन होने लगे तो उस समय की दुआ (प्रार्थना) दिल ही दिल में पढ़ लें। अगर इस संगत से गर्भ रह जाये तो सन्तान को शैतान (राक्षस) Evils

नुकसान न पहुंचा सकेगा।

संगत करने में नियत (इरादा) क्या हो?

नियत नाम है दिल के इरादे का। इस्लाम धर्म में कोई भी काम हो नियत का बड़ा महत्व है। अगर कोई व्यक्ति बहुत रुपया दान करे तो अल्लाह के यहां इस दान का कोई बदला नहीं मिलेगा और कोई आदमी बिल्कुल थोड़ा सा केवल अल्लाह को राजी व खुश करने के लिए दान करे तो अल्लाह के यहां उसकी कदर और बदला है। इसलिए कोई भी काम हो अच्छी नियत रखनी चाहिए।

हज़रत अली (राजी हुआ अल्लाह उनसे) ने अपनी वसीयत में लिखा है कि जब कभी संगत का इरादा हो तो इस नियत से किया करें कि ज़िना (अवैध सम्बन्ध) से बचा रहूंगा और दिल इधर उधर नहीं भटकेगा और औलाद नेक होगी। इस नियत से संगत करने में भी सवाब है।

*

अपरिचित स्त्री को देख कर अपनी पत्नी से संगत करने से दिल पवित्र होता है

हज़रत मुहम्मद (अल्लाह की उन पर सलामती हो) ने इर्शाद फ़रमाया (कहा) है कि अगर किसी व्यक्ति की नज़र किसी अपरिचित स्त्री पर पड़ जाये और मन में उसकी चाह पैदा हो तो उसको चाहिए कि अपनी पत्नी से संगत कर ले तो इस संगत करने से उसके दिल से बुरा विचार दूर हो जावेगा और फ़रमाया कि जब औरत सामने आती है तो शैतान की सूरत में आती है। अतः जब तुममें से कोई किसी स्त्री को देखे और वह उसको अच्छी मालूम हो तो उसको चाहिए कि अपनी पत्नी से संगत कर ले क्योंकि उसके पास भी वही बात है जो दूसरी के पास है।

स्त्री के स्तन चूमने की इजाज़त

स्त्री के शरीर में कुछ अंग ऐसे हैं जिनके चूमने, गुदगुदाने-मसलने से स्त्री को आनन्द प्राप्त होता है। अतः यदि कोई व्यक्ति स्त्री के स्तन चूमे या चूसे तो कोई मनाही नहीं है परन्तु इसका पूरा ध्यान रहे कि स्त्री का दूध मुंह से अन्दर हलक (कन्ठ) में न पहुंच जाए क्योंकि यह मकरूहे तहरीमी (हराम) है।

गर्भवती स्त्री से संगत की इजाज़त (अनुमति)

गर्भ अवस्था और ऐसी दशा में जब कि बच्चा दूध पी रहा हो तो स्त्री से संगत करना जाइज है। कोई मनाही का हुक्म नहीं है परन्तु तबीबों (वैद्यों) के अनुसार संगत न करना ही उचित और बेहतर है क्योंकि संगत करने से नए गर्भ की स्थापना हो सकती है और गर्भ के बाद स्त्री का दूध खराब हो जाता है जिसके पीने से बच्चे का स्वास्थ्य खराब और सूखा रोग हो सकता है।

नबी-ए करीम (उन पर सलामती हो) ने उम्मत को ऐसी बातों की हिदायत फ़रमाई है जो उम्मत के हक़ में लाभदायक हों और उन बातों से रोका है जिनके करने से किसी भी प्रकार की हानि पहुंचे। इसीलिए आपने फरमाया है कि अपनी संतानों की गुप्त रूप से हत्या न करो यानी दूध पीते बच्चे की मौजूदगी में स्त्री से संगत करने में बच्चे को नुक़सान पहुंचता है लेकिन आपका यह निर्देश इस दर्जे में नहीं है कि इस हालत में स्त्री से संगत को हराम समझा जावे। अगर दूध पिलाने की वजह से उतने दिनों संगत को मना कर दिया जाता तो किसी-किसी पति को इस रुकावट से तकलीफ़ होती क्योंकि दूध पिलाने का सिलसिला 2 व 2½ साल तक रहता है। इस बात का ख्याल करते हुए आपने फरमाया कि मैं चाहता था कि दूध पीते बच्चों की माताओं से संगत करने को मना कर दूं मगर ईराक व रूम के लोगों के बारे में मुझे मालूम है कि वह ऐसा करते हैं और उनके बच्चों को इससे नुकसान नहीं पहुंचता।

ऊपर लिखी हदीस की रोशनी में पुरुष को इतना परहेज तो करना चाहिए कि दूध पिलाने के दिनों में जल्दी-जल्दी संगत करने से बचता रहे।

कुछ विशेष रातों में सम्भोग न करें

इमाम गिजाली ने लिखा है तीन रातों में सम्भोग करना मकरूह है। एक कमरी महीने की पहली रात चन्द्रमा (दौज), दूसरे आखरी रात (अमावस) और पन्द्रहवी रात। कहते हैं इन तीनों रातों में शैतान (राक्षस) मौजूद होते हैं और कुछ यह कहते हैं कि इन रातों में शैतान संगत करते हैं और यही बात हज़रत अली हज़रत मआविया और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाह अन्हु ने फ़रमाई है मौलाना शाह इसहाक साहब ने उपरोक्त रातों के अलावा बुध की रात, दोनों ईदों की रातें और जिस रात के बाद सुबह को सफ़र का इरादा हो संगत करने को मना किया है। इन रातों में संगत करने से यदि गर्भ रह जाय तो बच्चे में ऐब हो सकता है। तिब्बे नबवी (पुस्तक) में भी अबूनईम के हवाले से लिखा है कि अल्लाह के रसूल (उन पर सलामती हो) ने हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया कि ऐ अली, महीने में (पन्द्रहवीं रात) में संगत न किया करो क्योंकि इस तारीख में शैतान आया करते हैं।

शिमाइले त्रिमिजी (पुस्तक) में लिखा है कि बुजुर्गों की राय में ठीक नमाज़ के समय संगत करने से यदि गर्भ रह जाये तो सन्तान नाफरमान पैदा होती है।

*

संगत के लिए विशेष समय की फ़ज़ीलत(अच्छाई)

हज़रत अली रज़ि0 ने अपनी वसीयत में लिखा है कि सोमवार को संगत करने से लड़का कारी (कुरान की सही रूप से पढ़ने वाला) और मंगल की रात में संगत करने से आलिम व मुत्तकी (विद्वान और अल्लाह से डरने वाला) और बृहस्पति के दिन दोपहर से पहले संगत करने से आलिम व हकीम पैदा होता है और शैतान उससे भागता है और जुमा (शुक्रवार) के दिन नमाज़ से पहले संगत करे तो नेक पुत्र पैदा होगा और जब मरेगा तो शहीद होकर मरेगा और जुमे की रात में संगत करे तो मुखलिस पुत्र पैदा हों और यह भी फरमाया कि जब पतन हो जावे तो चाहिए कि तुरन्त स्त्री से अलैहदा न हों बल्कि इतना ठहरे कि उसे भी पतन हो जावे नहीं तो औरत उसकी दुश्मन हो जावेगी। फिर जब दोनों निपट जायें तो दोनों अलैहदा 2 कपड़ों से अपने अपने शरीरों को पाक साफ़ करें। दोनों का एक ही कपड़े से साफ़ करना उचित नहीं।

अधिक संगत की मुमानियत (मनाही)

फकीह अबुललैस ने अपनी पुस्तक बुस्तान में लिखा है कि हज़रत अली रज़ि ने फरमाया है कि जो व्यक्ति इस बात का इच्छुक हो कि उसकी सेहत और तन्दुरुस्ती ज्यादा दिनों तक कायम रहे उसको चाहिए कि रात को खाना खाया करे (भूखा न सोये) किसी का करजदार न रहे, नंगे पांव न फिरा करे और स्त्री से संगत कम किया करे।

वैसे भी इस्लाम धर्म ने हर अमल में एतदाल (न बहुत कम न बहुत

ज़्यादा) को पसन्द किया है। अब सवाल यह पैदा होता है कि एतदाल का पैमाना क्या हो ? इस बारे में हकीमों की राय है कि संगत करने की हर वह इच्छा जो किसी बाहरी दबाव जैसे सुन्दर युवा स्त्रियों का दर्शन, सम्भोग सम्बन्धी बातें, नंगी स्त्रियों के चित्र, कोक-शास्त्र आदि न देखना हो बल्कि वास्तव में सम्भोग की इच्छा मन में उत्पन्न हो और स्त्री भी राज़ी हो तो ऐसी संगत से दिल को सकून और खुशी प्राप्त होती है अन्यथा इसके विपरीत कमज़ोरी पैदा होती है।

एक बार संगत कर लेने के पश्चात् फिर कितने समय बाद संगत की जाए इस विषय में हर पुरुष को अपनी काम शक्ति का लिहाज़ रखते हुए हफ़्ता दो हफ़्ता-तीन हफ़्ता या महीने में एक बार करना उचित है क्योंकि आजकल शुद्ध व पौष्टिक खाद्य पदार्थ और अच्छी गिजा हर एक को प्राप्त नहीं है।

हज़रत मौलाना शाह इसहाक साहब रहि० ने (60 साल पूर्व) लिखा है कि चार दिन बाद करें और यदि स्त्री की इच्छा हो तो ज्यादा में भी कोई हर्ज नहीं क्योंकि स्त्री की खातिरदारी और उसकी योनि की सुरक्षा के लिए उसकी इच्छा की पूर्ति भी ज़रूरी है कि उसका ध्यान किसी अन्य पुरुष की तरफ न जाए और दिल में बुरा ख्याल पैदा न हो। यह केवल हालात के अनुसार एक मश्विरा है (और किसी दुर्घटना से बचाव है) वैसे आम हालत (सामान्य स्थिति) में अधिक संगत से बचना स्वस्थ्य रहने के लिए ज़रूरी है। अधिक संगत करने से एक नुकसान यह होता है कि शीघ्र पतन की बीमारी पैदा हो जाती है।

सारी रात एक ही बिस्तर पर स्त्री-पुरुष का साथ-साथ सोना यद्यपि जायज़ तो है मगर यह भी संगत की तरह हानि कारक है इससे भी काम शक्ति

में कमज़ोरी आती है।

शीघ्र पतन का नुकसान

शीघ्र पतन उस हालत को कहते हैं कि जब पुरुष संगत का इरादा करे या जैसे ही संगत शुरु करे उसका वीर्य निकल जाये या एक आध मिनट में पतन हो जाए जबकि यह बात कम से कम 2-3 मिनट बाद होनी चाहिए। अगर पुरुष को शीघ्र पतन की शिकायत हो तो उस दशा में स्त्री को तसल्ली नहीं होती और उसकी इच्छा पूरी नहीं होती क्योंकि इस दशा में स्त्री का पतन नहीं होता वह अदभर में रह जाती है और इस बात से उसको दुख होता है। इसका एक नुकसान यह भी है कि सन्तान नहीं होती।

इस बीमारी (मर्ज) का कारण वीर्य का पतला होना है और लिंग की Sensitiveness का बढ़ जाना या लिंग की नसों में ढीलापन आ जाना है।

यदि वीर्य बहुत पतला हो गया हो तो वीर्य को गाढ़ा करने वाली चीजें इस्तेमाल की जाएं और अगर लिंग की नसों में ढीलापन आ गया हो तो तिला आदि इस्तेमाल किया जाए।

हकीम राजी का कहना है कि अधिक सम्भोग की आदत बूढ़ों को मौत की नींद सुलाती है, जवानों को बूढ़ा, मोटों को दुबला और दुबले कमजोर आदमियों को मुर्दा बनाती है इसलिए सच्ची इच्छा और पूरी उत्तेजना के बिना सम्भोग न करना चाहिए।

काम शक्ति और काम इच्छा की कमी व ज़्यादती

हर स्त्री पुरुष में काम वासना एक समान व बराबर नहीं होती है किसी पुरुष में काम वासना अधिक और किसी में बहुत कम होती है। और यही हाल स्त्रियों का है। किसी में बहुत ही कम और किसी में बहुत ज़्यादा होती है। क्षेत्रीय आबो हवा और खाने-पीने की चीजों का भी इसमें बड़ा दखल है। गर्म इलाकों जैसे अरब देश के लोगों में काम वासना ज़्यादा और ठन्डे इलाकों में उनकी अपेक्षा कम होती है गर्म देशों में लड़कियों को 9 वर्ष में ही मासिक धर्म आना शुरू हो जाता है जबकि ठन्डे देशों में 13 साल से 16 साल की अवस्था में होता है।

सम्भोग कार्य के लिए जिस ताक़त की ज़रूरत होती है उसे काम शक्ति या कुव्वतेबाह कहते हैं जिस मनुष्य में यह कुव्वत जितनी ज़्यादा होती है उतना ही सम्भोग में स्त्री व पुरुष दोनों को आनन्द प्राप्त होता है और अगर पुरुष में यह शक्ति कम हो और स्त्री में कामवासना अधिक हो तो ऐसी दशा में बहुदा स्त्री को आसूदगी व तसल्ली नहीं होती है अगरचे पुरुष की हविस पूरी हो जाती है। बहुदा इस अधूरे मिलाप में स्त्री को पतन नहीं हो पाता है जो उसको बहुत बुरा लगता है। और कष्टदायक होता है स्त्री में मानसिक तनाव व हिस्टीरिया आदि बीमारी पैदा हो जाती है। सम्भोग में रूचि नहीं रहती और पति से घृणा करने लगती है और इसी कारण तलाक तक की नौबत आ जाती है। अधिक सम्भोग करने से भी कुव्वते बाह कमज़ोर हो जाती है। ऐसी सूरत में मर्द को

अपने इलाज की तरफ़ ध्यान देना चाहिए और नबी करीम (उन पर सलामती हो) की बताई हुई बातों से फायदा उठाना चाहिए और दवाओं के बजाए शक्ति वर्धक आहारों से कमज़ोरी को दूर करना चाहिए।

आजकल के इश्तहारी हकीम डाक्टर जो आपको Sex Expert और Sex Specialist लिखते हैं या अखबारों व पत्रिकाओं में नामर्दी की दवाओं व इलाज के इश्तहार (विज्ञापन) देते हैं उनकी वीर्य रुकावट की दवाओं में बहुधा अफीम, धतूरा, भंग, संख्या आदि ज़हरीली चीज़ें शामिल होती हैं जिनसे कुछ समय के लिए रुकावट बढ़ जाती है मगर बाद में बहुत नुकसान होता है और इनका लगातार इस्तेमाल जल्द कब्र के गढ्ढे तक पहुँचा देता है। अच्छी गिज़ा से धीरे धीरे कुव्वतबाह पैदा होती है वही उचित है वह देरपा और हमेशा के लिए होती है।

हिकमत की बातें

1- किसी अप्राकृतिक तरीके से सम्भोग करना और मनी निकलते वक्त उसको रोकना सूजाक और दूसरे पेशाब की नाली के रोग पैदा करता है।

2- सम्भोग के बाद गुस्ल (स्नान) करने से पहले गिज़ा खाना भूलने की बीमारी पैदा करता है।

3- सुन्दर स्त्रियों को हर समय ख्याल में रखना, इश्क व मुहब्बत की कहानी व उपन्यास पढ़ना, नंगी तस्वीरें देखना और इस दौर की सबसे बड़ी लानत ब्लू प्रिन्ट नाम की लज्जाहीन फिल्में देखना शीघ्र पतन की बीमारी पैदा करते हैं।

4- संगत कम ही करना हर हाल में मुनासिब और बेहतर है क्योंकि संगत में जो चीज़ खर्च होती है वही तो रोग़ने हयात (ज़िन्दगी का तेल) है ज़िन्दगी का चिराग़ इसी से रोशन रहता है।

5- स्त्री व पुरुष का हमेशा एक ही बिस्तर पर सोना भी कमज़ोरी पैदा करता है।

6- शीघ्र पतन से बचने के लिए खट्टी चीज़ें अधिक न खाया करें।

7- बुखार की हालत में संगत करने से बदन में हरारत (गर्मी) बस जाती है जो कि (क्षय रोग) की सूरत इख़्तयार कर लेती है।

8- किसी ग़ैर आदमी के मकान में या किसी ऐसी जगह जहां किसी के अचानक आ जाने का डर हो संगत न करें ऐसी हालत में संगत का भरपूर आनन्द प्राप्त नहीं होता और कमज़ोरी पैदा होती है।

9- पेठ खाने से भरा होने की हालत में संगत करने से एक तरफ़ तो शीघ्र पतन होता है दूसरी तरफ़ (हज़्म) पाचन क्रियाओं में कमज़ोरी, जिगर व आंतों में सूजन आदि जैसे रोग पैदा हो जाते हैं खाना खाने के तीन चार घंटे बाद ही संगत करना चाहिए।

10- पेशाब ज़ोर से मालूम होने की हालत में संगत करने से पेशाब की नाली के रोग और पाख़ाना ज़ोर से मालूम होते समय संगत करने से बवासीर व गुदा के अन्य रोग पैदा हो सकते हैं।

11- आंखें दुखने की हालत में संगत करने से आंखों में जख्म व सफेदी पैदा हो जाती है।

12- नशे की हालत में संगत करना तो तमाम शरीर में खराबी पैदा होने का कारण बन सकता है। इससे गठिया (बात रोग) Rehumatic Pain

भी हो सकता है।

13- जिस रात पुरुष का इरादा संगत करने का हो तो स्त्री से सुबह ही इस बात को बता दे ताकि वह अपने शरीर को पाक साफ़ कर ले, नीचे के बाल दूर करलें और अपने को संवार ले। पेश्तर इत्तला से स्त्री में भी मिलाप का शौक़ पैदा हो जाने से दोनों को ही पूर्ण आनन्द प्राप्त होता है और ऐसी संगत का सेहत पर भी अच्छा असर पड़ता है।

14- अगर संगत के समय पेशाब का ज़्यादा तक़ाजा न हो तो व्यर्थ पेशाब न करें नहीं तो लिंग की सख़्ती जल्द ख़त्म हो जायेगी।

15- अगर स्त्री संगत से पूर्व पेशाब कर ले और योनि को ठन्डे पानी से धोले तो योनि में तंगी आ जाती है जिससे ज़्यादा आनन्द प्राप्त होता है।

एक लटका या नुक्ते की बात

जो व्यक्ति इस पुस्तक में दिए गए निर्देशों के अनुसार संगत करे और संगत के बाद किसी घी से बनी मीठी चीज़ के कुछ लुक़मे (कौर) खाने की आदत बना ले यानी हमेशा खा लिया करे तो उसे संगत से कमज़ोरी का असर महसूस न होगा और हर प्रकार के नुक्सान से सुरक्षित रहेगा। ताकतवर गिजा मौसम के अनुसार अण्डों का हलवा, गाजर का हलवा या किसी और प्रकार बादाम पिस्ता आदि की मिठाई या दूध में शुद्ध शहद मिलाकर या छुआरे दूध में औंटाकर, खोये की बर्फ़ी मलाई जो भी मिल सके। अगर ऐसी कोई चीज़ प्राप्त न हो तो कम से कम दो तीन तोला गुड़ ही खालें इससे भी वही लाभ होगा।

दो पुरुषों अथवा दो स्त्रियों को एक ही बिस्तर में सोने की मुमानियत (निषेध)

इस्लामी तालीमात ने इन्सानी ज़िन्दगी के हर हिस्से में अपनी रोशनी पहुँचाई है और कोई गोशा और कोना ऐसा नहीं छोड़ा जहां उसने उचित निर्देश न दिए हों।

मौजूदा ज़माने की बहुत बड़ी बुराईयों में हमजिन्सी (समलिंगी) की आदत भी है जो न केवल मर्दों में ही नहीं बल्कि औरतों में भी दाखिल होने लगी है और नई सभ्यता के यह गन्दे अण्डे समाज को बुरी तरह दूषित और ज़हरीला बना रहे हैं। जिन लोगों ने इस्मत चुगताई की कहानी "लिहाफ़" पढ़ी है उनको मालूम है कि दो औरतें एक लिहाफ़ में क्या-क्या हरकतें कर सकती हैं जिनका यहां लिखना भी मुनासिब नहीं है हिक्मत के कीमती ख़ज़ाने अहादीस नबी (नबी उन पर सलामती हो) में उनके रोकथाम की सूरतें पहले से ही बता दीं हैं। ताकि एहतियातीतदबीर करके उन बुराईयों को जो मेल मिलाप की भिन्न भिन्न शक्लों में सामने आती हैं समाज को बर्बाद न कर सकें।

हुज़ूर नबी करीम (उन पर सलामती हो) ने एक ही बिस्तर में दो मर्दों या दो औरतों को एक साथ सोने को मना किया है और नंगे होने की हालत में एक औरत का दूसरी औरत से बदन मिलाना भी मना है

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (अल्लाह उनसे राज़ी हो) ने बयान किया है कि हुज़ूर अकरम (उन पर सलामती हो) ने फ़रमाया है कि न कोई मर्द किसी

मर्द को नंगा देखे और न दो मर्द एक ही बिस्तर और एक कपड़े (चादर या लिहाफ़) में सोयें और न दो औरतें एक कपड़े में सोयें। (मिश्कात शरीफ़ जिस्म के पोशीदा हिस्सों के चेपटर में और रियाजुससालेहीन (पुस्तक)में स्पष्ट शब्दों के साथ हदीस शरीफ़ में दस साल से ज़्यादा उम्र के बच्चों को अलग-अलग बिस्तर पर सोने का हुक्म है और यह हिकमत व मसलेहत हर होशमन्द इन्सान की समझ में आने वाली है। बदन से बदन के मिलने में जो लज़्ज़त व आनन्द मिलता है उसकी रोक-थाम का इलाज मर्ज़ पैदा होने से पहले ही कर दिया है। इस ज़माने में सख़्ती से इन अनमोल हिदायतों पर कारबन्द होना चाहिए और समझदार लड़कों व लड़कियों को सख़्ती के साथ अलैहदा-अलैहदा बिस्तरों में लिटाने और सुलाने का प्रबन्ध करना चाहिए।

लिवातत-इग़लाम अथवा लौन्डे बाज़ी Sodomy

एक आदमी का दूसरे आदमी या लड़के के साथ मुंह काला करने और अपनी शहवत (काम वासना) की आग बुझाने को इग़लाम या लौन्डे बाज़ी कहते हैं यह दुष्ट कुकर्म सबसे पहले हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम में पैदा हुआ। जिसको उन्होंने अल्लाह के हुक्म से रोकने की कोशिश की और हर तरह समझाया मगर जब क़ौम किसी तरह न मानी तो ख़ुदा की तरफ़ से उन पर अज़ाब भेजा गया और उन ज़ालिम व नाफ़रमानों की सारी बस्ती ऊपर नीचे करके मिटा दी गई। इससे मालूम हुआ कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को जिस कदर नाराज़गी और गुस्सा इस कुकर्म करने वालों पर आता है किसी और पर नही आता (अल्लाह बचाये)

इस ज़माने में अमरीका व इंग्लैंड आदि देशों में जो विज्ञान की तरक़्क़ी के कारण अपने को सबसे ज़्यादा सभ्यता वाला और ऊंचा समझतें हैं इस कुकर्म के करने वाले ज़्यादा होते जा रहे हैं और इसको बुराई व पाप नहीं समझा जा रहा है जिसके नतीजे में उन पर ख़ुदा की तरफ़ से एड्स (AIDS) नाम की अति भयंकर बीमारी अज़ाब बनकर नाज़िल (उतरी) हुई है और इस बीमारी का शिकार अधिकतर इसी कुकर्म के करने वाले हैं।

चूंकि यह बुरा काम कुदरत की मन्शा के कतई खिलाफ है इसलिए इसका सज़ा करने व कराने वाले (फ़ाइल मफ़ऊल) दोनों ही को भुगतना पड़ती है। ऐसा करने वाले का लिंग टेढ़ा, पतला और कमजोर हो जाता है, नसों में खराबी पैदा हो जाती है और फिर वह स्त्री के संगत के लाइक नहीं रहता और (मफ़ऊल) कराने वालों की गुदा की मल रोकने की कुदरती क्षमता बिगड़ जाती है। देखने में आया है कि कुछ समय बाद ऐसा कराने वालों के अन्दर ऐसी आदत पैदा हो जाती है कि वह ख़ुद ऐसा कराने के लिए लोगों पर अपना माल खर्च करके अपनी आग बुझाते हैं। हो सकता है कि मर्द की मनी के कीड़े उनकी गुदा में ऐसी खुजली या गुदगुदाहट पैदा करते हों कि वह बार-बार ऐसा कराने पर मजबूर हो जाते हों।

पुरुषों की तरह स्त्रियों में भी अप्राकृतिक तरीके

इस्लाम के आदेश स्त्री व पुरुष दोनों के लिए एक समान हैं। जो बातें या कार्य पुरुषों के लिए हराम व मना है वह उसी तरह स्त्रियों के लिए भी मना

व हराम हैं। चूंकि औरतों में भी अप्राकृतिक संगत पाई जाती है और क्यों न हो है तो एक ही जिंस (लिंग) Gender इस लिए औरतों को भी इन बुरी बातों से दूर रहना चाहिए। क्योंकि इसके नुकसान व सज़ा दुनिया व आख़िरत में यकसां हैं ज़्यादा खोलकर इन बातों का यहां लिखना इसलिए मुनासिब नहीं है कि जो नहीं जानती हैं वह भी जानकर न करने लगें क्योंकि शैतान बुराई की तरफ़ जल्दी ले जाता है। घर के बड़ों को चाहिए कि अपनी भोली-भाली, नासमझ बच्चियों, बहनों अथवा तलाकशुदा या विधवा औरतों को मुनासिब तरीके पर निगरानी करें या उनके अकदेसानी (पुन: विवाह) का इन्तज़ाम करें ताकि वह इस बुराई से बची रहें।

सम्भोग से रुकने का निषेध

अपनी पत्नी से संगत करना न केवल जायज़ है बल्कि यह भी अच्छी और ज़रूरी बात है। और इसमें भी सवाब है। जिस तरह पति का हक़ है उसी तरह पत्नी का हक है इसलिए कि सम्भोग की इच्छा स्त्री में भी खूब होती है परन्तु वह शर्म व हया और लज्जा के कारण जबान से नहीं कहती है। जब कराइन (चाल ढाल) से पत्नी की इच्छा का पता चल जाए तो पति को उसके साथ सम्भोग ज़रूर करना चाहिए जबकि उस समय पति में इसकी कुदरत व क्षमता हो। सम्भोग करना बिल्कुल त्याग देने को इस्लाम ने नाजायज़ और कभी-कभी सम्भोग करते रहने को ज़रूरी करार दिया है। करायन से मतलब यह है कि औरत खूब बनाव श्रृंगार करे, खुश्बू लगाए पति को तिरछी निगाहों से देखे आदि।

कुदरत का मतलब यह है कि संगत करने से मर्द को नाकाबिले बरदाश्त कमजोरी न हो। अगर औरत संगत के लिए कहे तो मर्द को उसकी इच्छा का पूरा करना (वाजिब) ज़रूरी है जबकि वह कभी-कभी संगत का तकाज़ा करे।

(अलबरीका शरह तरीका 1271)

अगर मर्द को शहवत (काम वासना) न हो तो भी केवल काम वासना न होने से सम्भोग त्याग देना जायज़ नहीं है बल्कि स्त्री की इच्छा का पूरा करना ज़रूरी है।

(फतावा रहीमिया 124)

अब रही यह बात कि कितने समय में स्त्री की इच्छा पूरी करना ज़रूरी है इसकी तफसील (विवरण) आगे आयेगी।

हकीम बू अली सेना ने लिखा है जिस तरह अधिक सम्भोग करने में खराबी है उसी तरह सम्भोग त्याग देने में भी नुकसान है। जो लोग संगत करना छोड़ देते हैं वह दौराने सर (चक्कर), आंखों में अंधेरा, बदन का भारी होना, अन्ड कोषों में सूजन आदि बीमारियों में मुबतिला हो जाते हैं।

स्त्री से अधिक समय तक अलग रहने की मनाही

चार माह से ज़्यादा पत्नी से अलग रहना और संगत न करने को फुकहा (इस्लामी कानून समझाने वालों) ने मना किया है क्योंकि स्त्री में कुव्वते सब्र चार

माह से ज़्यादा नहीं होती है जैसा कि हज़रत उमर (अल्लाह उनसे राजी हुआ) के साथ पेश आने वाले वाकिआ से पता चलता है जो इस तरह है कि एक बार अमीरुलमोमिनीन (राष्ट्रपति) हज़रते उमर मदीना शहर की गलियों में गश्त कर रहे थे कि एक मकान से किसी जवान औरत के गाने की आवाज सुनी जो कुछ इश्किया अशआर (गीत) गा रही थी जिसका अर्थ कुछ इस तरह का था कि "खुदा की कसम अगर मुझे खुदा का डर न होता तो आज चारपाई की चूलें चरचराने लगतीं। हज़रत उमर को कुछ शक हुआ और दरवाजा खोलने का हुक्म दिया मगर जब दरवाजा नहीं खुला तो आप दीवार फांदकर मकान के अन्दर दाखिल हुए तो वहां केवल एक औरत को पाया कोई मर्द न था। पूछने पर औरत ने बताया कि उसका पति काफी समय से जिहाद (लड़ाई) में गया हुआ है जिसकी जुदाई (विरहा) से बेचैन होकर में यह अशआर गा रही थी। यह सुनकर हज़रत उमर अपनी साहबज़ादी (पुत्री) ईमान वालों की मां हज़रत हफ़्सा (अल्लाह उनसे राजी हुआ) के पास गए और पूछा कि बग़ैर किसी शर्म व लिहाज़ के बताओ कि विवाहिता स्त्री बगैर पति के कितने दिन सब्र कर सकती है। जवाब में उन्होंनें नीची निगाहों से हाथ की चार उंगलियां उठा दीं। जिससे आपने समझ लिया कि औरत बग़ैर शौहर के चार माह तक सब्र कर सकती है इस जानकारी के बाद आपने जहां जहां इस्लामी लश्कर जिहाद पर थे आदेश भेज दिए कि शादीशुदा फौजियों को चार माह होने पर अपने घर जाने की इजाज़त दे दी जाए।

मसला :- अगर औरत अपने पति के चार माह से ज़्यादा अर्से तक दूर रहने पर राज़ी हो जाए तो चार माह से ज़्यादा अलग रहने में कोई हर्ज नहीं बल्कि एक साल भी अगर शौहर करीब न जाए तो जायज़ है

(शामी)

सम्भोग से सम्बन्धित दूसरे ज़रूरी मसले

मसला :- छोटी कम उम्र बीवी जो सम्भोग बर्दाश्त न कर सकती हो या ऐसी बीमार बीवी जिसको सम्भोग से नुकसान हो तो उस सूरत में भी उससे सम्भोग करना उचित नहीं है।

(अलबरीका)

मसला :- ऐसी बीमार बीवी जिससे संगत करने में उसे किसी प्रकार के नुकसान का अन्देशा तो न हो परन्तु गुस्ल (स्नान) करने से नुकसान हो ऐसी हालत में संगत कर सकते हैं औरत गुस्ल के बजाय तय्यमुम करले।

(अलबरीका)

मसला:- संगत करने के बीच किसी अपरिचित स्त्री का तसव्वुर (ख्याल, ध्यान) न करें। ऐसा करना भी सख्त गुनाह है यह भी एक प्रकार की जिना (हरामकारी) है।

मसला :- संगत ऐसे स्थान पर करना चाहिए जहां कोई दूसरा मर्द औरत समझदार बच्चा या बूढ़ा न हो। बाज उलमा ने ना समझ बच्चों, जानवरों या सोये हुए लोगों की मौजूदगी में भी संगत करने को मना किया है।

(अलमुदखल)

मसला:- जिस तरह पति को हैज (मासिक धर्म) व नफास (बच्चा पैदा होने के बाद का गन्दा खून पानी) की हालत में संगत करना जायज़ नहीं इसी तरह स्त्री पर भी लाज़िम है कि वह पुरुष को संगत न करने दे।

(तहतावी)

मसला:- अगर औरत को हैज़ आ रहा है तो औरत पर वाजिब है कि वह अपनी हालत की शौहर को खबर कर दे ताकि वह संगत न करे अन्यथा औरत गुनाहगार होगी।

(तहतावी)

मसला:- शौहर का बीवी से और बीवी का शौहर से कोई पर्दा नहीं। मर्द अपनी बीवी का सर से पैर तक सारा बदन देख व छू सकता है इसी तरह औरत को मर्द के बदन के हर हिस्से को हाथ से छूना व देखना जायज़ है चाहे शहवत (सहवास) के साथ हो या बिना शहवत के।

मसला:- मियां बीवी को एक दूसरे के बदन के हर हिस्से यहां तक कि शर्मगाह (योनि) को देखना जायज़ तो है मगर बिला ज़रूरत के योनि को देखना और छूना खिलाफ औला और मकरूह (अच्छाई से दूर और घिनावना) हैं

(आलमगीरी)

हदीस में आया है कि हज़रत आयशा (अल्लाह उनसे राज़ी हुआ) फ़रमाती हैं कि हुजूर (उन पर सलामती हो) की वफात (मृत्यु) हो गई मगर न कभी आपने मेरा सतर (गुप्त भाग) देखा और न मैंने आपका सतर देखा।

(मिश्कात अलबरीका)

मसला:- हज के ज़माने में हाजी मर्द औरत के लिए संगत करना जायज़ नहीं।

मसला:- संगत कर लेने के पश्चात् इस बात का इख्तयार है कि चाहे वुजू करके सोये, चाहि गुस्ल करके लेकिन गुस्ल करके सोना अफ़ज़ल (अच्छा) है।

मसला:- संगत के समय अगर हाथ में ऐसी अंगूठी हो जिस पर अल्लाह का नाम खुदा हो तो उसको भी उतार दें।

गुस्ले जनाबत (संगत के बाद का स्नान) का तरीका

जब रात को मियां बीवी संगत करें तो सुबह को फ़ज्र की नमाज़ से पहले और अगर दिन में ऐसा करें तो अगली नमाज़ से पहले पहले मर्द व औरत दोनों को गुस्ल करना ज़रूरी है इसी को गुस्ले जनाबत और गुस्ल न करने तक नापाक रहने को हालते जनाबत या जंबी होना कहते हैं

इस गुस्ल के करने में बहुत एहतियात की ज़रूरत है। मर्द औरत दोनों ही अपने गुप्त अंगों की सफाई में बहुत सावधानी से काम लें। मर्द अपने लिंग को अच्छी तरह धोएं कहीं ऐसा न हो कि खाल में मनी जमी रह जाए और इसी तरह औरत भी अपनी योनि की अच्छी तरह सफाई करे। गुस्ल से पहले पेशाब कर लेना भी अच्छा है। इन स्थानों की नापाकी को धोने के बाद वुज़ू करे फिर तमाम बदन पर पानी डालकर हाथों से बदन को अच्छी तरह मले ताकि कोई भाग सूखा न रह जाए बालों की जड़ों तक पानी पहुंच जाए। बगलें, टुन्डी और कान के सूराख तक बाहर का हिस्सा पानी से तर हो जाए उसके बाद सारे शरीर पर पानी बहाएं। गुस्ल में तीन फ़र्ज़ हैं एक, एक बार 1- मुंह भरकर कुल्ली या गरारा करना, रोज़े व्रत की हालत में ग़रारा न करें बल्कि इस प्रकार कुल्ली करें कि हलक़ में पानी न जाए चाहे कोई सा गुस्ल (स्नान) हो और रोज़ें की

हालत में बीवी से संगत करना भी मना है। 2- नाक में नर्म हिस्से तक पानी पहुंचाना, और 3- पूरे बदन पर एक बार पानी इस तरह से बहाना कि बाल बराबर हिस्सा सूखा न रह जाए। जो औरतें नेल पॉलिश लगाती हैं वह खूब समझ लें कि बिना नाखूनी खुर्चे उनका गुस्ल न होगा। इसलिए बजाए नेल पॉलिश के मेहन्दी लगाया करें। और यह तीनों काम 3-3 बार करना सुन्नत है। सोते में एहतलाम (स्वप्न दोष) हो जाए या जागने की हालत में बिना संगत के ही वीर्य निकल जाए या लिपटने चिपटने में शहवत के साथ मनी का पतन हो जाए तो भी गुस्ल फर्ज हो जाता है। औरत की योनि में मर्द की सुपारी दाखिल (प्रवेश) होने पर चाहे वीर्य का पतन हो या न हो दोनों पर गुस्ल फर्ज़ हो गया, जो औरतें या मर्द पांचों समय की नमाज़ पाबन्दी से नहीं पढ़ते हैं केवल काहिली व झूठी शर्म व हया से गुस्ल किए बिना कई-कई दिन गुज़ारते हैं यह बड़ी नहूसत (अशुभ) और बे बरकती की बात है। जिस घर में जंबी (बिना गुस्ल वाले) हों वहां से रहमत के फरिश्ते भी दूर रहते हैं।

अज़ल अथवा निरोध का इस्तेमाल

आजकल परिवार नियोजन के प्रचार से प्रभावित होकर मुस्लिम व गैर मुस्लिम सब ही कम या ज़्यादा निरोध का इस्तेमाल करने लगे हैं इसलिए ज़रूरी हुआ कि इस पर भी कुछ रोशनी डाल दी जाए।

हुजूर नबी करीम (उन पर सलामती हो) के सहाबा (साथी) के वाक्यात से मालूम होता है कि आप के ज़माने में भी लोग औलाद की पैदाइश को रोकने के लिए अजल किया करते थे और आप ने इसको मना नहीं फ़रमाया।

अज़्ल इसे कहते हैं कि जब संगत करने में वीर्य निकलने को हो उस समय मर्द अपने लिंग को औरत की योनि से निकाल कर अपना वीर्य योनि के बाहर गिरा दें। इस तरह जब मनी योनि में नहीं पहुंचेगी तो फिर गर्भ स्थापना का सवाल ही नहीं पैदा होता और यही बात निरोध के इस्तेमाल से भी होती है कि वीर्य योनि में नहीं गिरता है।

हज़रत इमाम गिज़ाली ने अपनी किताब 'अहया' में यूं लिखा है कि एक सही रिवायत हज़रत जाबिर (अल्लाह उनसे राजी हो) से यह भी है कि एक व्यक्ति हुजूर नबी करीम (आप पर सलामती हो) की खिदमत में आए और निवेदन किया कि ऐ अल्लाह के रसूल मेरे पास एक (दासी) लोंडी है वह मेरी खिदमत करती है दरख्तों को पानी देती है और मैं उससे संगत करता हूं परन्तु यह नहीं चाहता कि उसको गर्भ रहे इसलिए मैं अजल कर लेता हूं। आपने जवाब में कहा कि तू चाहे तो अपना वीर्य उसके बाहर निकाल दे मगर जो कुछ उसके मुक़द्दर में है वह उसको पहुंच कर रहेगा। कुछ दिन बाद वही व्यक्ति फिर आया और कहा कि हुजूर वह लोंडी तो हामला (गर्भवती) हो गई। आपने फ़रमाया कि मैंने तो कह दिया था कि जो कुछ उसके मुकद्दर में है वह उसको पहुंचेगा।

इसी वाक्या को या इस जैसे किसी दूसरे वाकिया को एक मिस्री आलिम अल्लामा यूसुफ़ अलकरजावी ने इन शब्दों मे लिखा है।

" एक हदीस में है कि एक शख़्स (व्यक्ति) ने रसूलुल्लाह (उन पर सलामती हो) की सेवा में उपस्थित होकर निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह मेरी एक लोंडी (दासी) है जिससे मैं अजल करता हूं। उससे मुझे वैसी ही रग़बत

(चाहत) है जैसी मर्दों को औरतों से होती है लेकिन मैं इस बात को पसन्द नहीं करता कि वह हामला (गर्भवती) हो जाए। यहूदी लोग अजल को मुवद्दये सुगरा (एक तरह से औलाद की हत्या) कहते हैं आपने फ़रमाया यहूदी गलत कहते हैं। यदि अल्लाह बच्चा पैदा करना चाहे तो तुम उसको नहीं रोक सकते।

मुझे खुद यह बात बहुत जगह देखने और सुनने को मिली है कि गर्भ स्थापना रोकने के सारे उपाय असफल और बेकार रहे और हमल ठहर गया और गर्भपात कराने और हमल गिराने की कोशिश भी कामयाब नहीं हुई।

पुरुष की मनी की एक बूंद में लाखों शुक्राणु होते हैं जो योनि के बाहर वीर्य गिराने या निरोध में वीर्य रह जाने से लिंग में चिपटे रह जाते हैं और उसी समय दुबारा संगत में वह शुक्राणु (sperms) स्त्री के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं और गर्भ की स्थापना हो जाती है और सारी कोशिश निरस्त व बेकार हो जाती है कभी निरोध के फट जाने से वीर्य निकल कर योनि में पहुंच जाता है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का पैदा होना और फिरऔन बादशाह की सारी तदबीरें फेल होना। फिरऔन बादशाह को ज्योतिषी ने बताया कि फलां कबीले में फलानी रात में एक बच्चे की मां गर्भवती होगी। और फिर वह बच्चा तेरा राजपाट नष्ट होने का कारण बनेगा। फिरऔन ने उस परिवार की सारी स्त्री और सारे पुरुष अलग-अलग करा दिए और उन पर पहरा बैठा दिया परन्तु कुदरत ने चौकीदारों को सुला दिया और स्त्री पुरुष आपस में मिल लिए। ईमान वालों की नसीहत के लिए काफी है। अब जो लोग गर्भ रोकने के उपाय करें वह ऐसा ही है जैसा उर्दू कवि गालिब ने कहा-

"जी को बहलाने को गालिब यह ख्याल अच्छा है"

अब रहा यह सवाल कि अजल या निरोध का इस्तेमाल इस्लामी शरीयत (कानून) में जायज़ होगा या नहीं इस बारे में उलमा के विचार अलग-अलग है।

हनफी आलिम हजरत मौलाना शाह इस्हाक साहब देहलवी ने जो हज़रत मौलाना शाह वली उल्लाह परिवार के मशहूर आलिम हैं आज से बहुत पहले अपनी फारसी पुस्तक मसायले अरबईन (उर्दू अनुवाद रिफा हुल मुसलिमीन) में लिखा है कि अपनी बांदी (खरीदी हुई दासी) जो अब नहीं है उसकी बिना इजाज़त अजल करना जायज़ है लेकिन हुरी (आजाद) बीवी से उसकी बिला इजाज़त अजल करना जायज़ नहीं इसलिए कि लज़्ज़त (आनन्द मजा) में भी स्त्री का हिस्सा है।

फ़ायदा- (जब मर्द की मनी औरत की योनि में गिरती है उस समय औरत को एक खास तरह का आनन्द प्राप्त होता है) हुजूर नबी करीम (उन पर सलामती हो) के बयान से जब यह बात मालूम हो गई कि इन्सान की सारी कोशिशें अल्लाह की मर्जी के खिलाफ़ कारगर नहीं होतीं तो फिर इन बेकार बातों से बचना अच्छा है।

गर्भ निरोधक तदबीरों में सबसे आसान तरीका यह है कि स्त्री के मासिक धर्म समाप्त होने के बाद एक हफ़्ता और मासिक धर्म प्रारम्भ होने से 1 हफ़्ता पहले के दिन वैदिक हिसाब से सुरक्षित दिन माने गए हैं। इन दिनों में स्त्री से संगत करने से गर्भ स्थापना नहीं होती है क्योंकि इन दिनों में स्त्री के शरीर में (OVA) अण्डे नहीं होते हैं।

यदि मासिक धर्म समाप्त होने के पश्चात् कोई स्त्री होम्योपैथिक द ा नेट्रम मयोर एक हजार नम्बर की एक खुराक सोते समय खा ले अगले मासिक धर्म तक गर्भ न रहेगा। 80 प्रतिशत सफल है।

क़ुव्वते बाह (काम शक्ति) बढ़ाने वाले आहार

अबू नईम ने अपनी पुस्तक किताबुततिब में लिखा है कि रसूलुल्लाह (आप पर सलामती हो) को खजूर को मस्का (मक्खन) के साथ खाना बहुत अज़ीज व पसन्द था।

फ़ायदा– उलमा ने लिखा है कि इसको खाने से काम शक्ति बहुत ज़्यादा होती है बदन बढ़ता है आवाज़ साफ़ होती है मसका और शहद मिलाकर खाया जाए तो पसली के दर्द (Pleurisy) में फ़ायदा करता है शरीर को मोटा करता है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 बयान करते हैं कि एक बार नबी करीम (आप पर सलामती हो) ने हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम से अपनी कुव्वते बाह के विषय में कहा तो हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम ने कहा कि आप हरीसा खाया करें इसमें चालीस मर्दों की ताकत है। (तिब्बे नबवी) मजाकुल आरफीन में भी यह हदीस है और हाशिये (Side) पर लिखा है कि हरीसा कुटे हुए गेंहू गोश्त,घी और मसाले डालकर बनाया जाता है।

इमाम ग़िज़ाली रहि० ने लिखा है कि चार चीजें कुव्वते बाह को बढ़ाती

हैं। 1- चिड़ियों का खाना 2- इतरी फ़ल खाना 3- पिस्ता खाना, 4- तरा तेज़ खाना।

अबू नईम से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (उनपर सलामती हो) ने बताया कि पुश्त का गोश्त तमाम गोश्तों से बेहतर होता है।

फ़ायदा- उलमा ने लिखा है कि इस गोश्त में कुव्वते बाह ज्यादा होती है।

(तिब्बेनबवी)

हज़रत अली रज़ि0 बयान करते हैं कि एक आदमी हुजूर (आप पर सलामती हो) के पास आया और उसने कहा कि मेरे घर में औलाद पैदा नहीं होती तो हुजूर (आप पर सलामती हो) ने उसको यह इलाज बताया कि तू अण्डे खाया कर।

°तिर्मिज़ी (हदीस की किताब) में लिखा है कि एक मौके पर हुजूर (आप पर सलामती हो) के सामने जबकि आपके साथ हज़रत अली रज़ि0 भी थे। खजूरें और चुकन्दर पेश किए गए तो आपने हज़रत अली को खजूरें खाने से मना किया। (उन दिनों हज़रत अली की आंखें दुख रही थीं और दुखती आंखों में खजूर खाने से नुक्सान होता है इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना कर दिया और चुकन्दर के लिए फरमाया इसमें से खाओ यह तुम्हारे लिए फ़ायदेमन्द है। यह तुम्हारी ना ताक़ती को दूर कर देगा। इस हदीस से मालूम हुआ कि चुकन्दर खाने से कमजोरी दूर होती है। और कुव्वत

° कुछ उलमा इस हदीस के सही होने से इन्कार करते हैं

बाह में हरकत पैदा करता है। और बीमारी में परहेज़ करना भी ज़रूरी है। (तिब्बे नबवी)

एक रिवायत में हज़रत आयशा रजि0 अन्हा से मनकूल है कि हुज़ूर (आप पर सलामती हो) को हसीस बहुत पसन्द था।

फायदा- हसीस बनता है खजूर, मक्खन और जमे हुए दही से मिल कर। यह बदन की ताक़त और बाह को बढ़ाता है।

ज़ैतून का तेल खाना और उसकी मालिश करना, शहद खाना, तिल और खजूर मिलाकर खाना कलोंजी, लोबिया, लेहसन आदि भी कुव्वते बाह को बढ़ाते हैं।

हज़रत हुज़ैल बिन हकम कहतें हैं कि अल्लाह के रसूल (आप पर सलामती हो) का कहना है कि बदन के बालों को जल्दी जल्दी दूर करना कुव्वते बाह को बढ़ाता है। हकीमों के नज़दीक यह नाफ़ (टुन्डी के नीचे) के बाल हैं।

ताक़त बढ़ाने वाली चीज़ें

खाने पीने की चीज़ों का कुव्वते बाह से बड़ा गहरा सम्बन्ध है। जो खुराक हम रोजाना खाते हैं वह पेट में पहुँचकर हज़्म होकर खून पैदा करती हे और फिर खून से फ़ोतों की क्रिया से मनी तैयार होती है जो ज़िन्दगी का खास जौहर है और लज़्ज़तों का सरचश्मा (स्रोत) है इसलिए हमेशा ऐसी चीजें खाना चाहिए जिनसे कुव्वते मरदुमी हमेशा कायम रहे और बदन की ताकत में भी कमी न आए। दिल और दिमाग भी कमज़ोर न होने पाए और कुव्वते बाह को

नुकसान पहुँचाने वाली चीज़ों से बचना चाहिए।

कुछ चीज़ों के ख़ास फ़ायदे

अनाजों में- गेंहू, चना, बाकला, लोबिया, उर्द, मूंग, चावल (पुलाव या बिरयानी) तिल, बिनौला, मूंगफली आदि।

हरी सब्ज़ी में- प्याज़ और उसके बीज, लेहसन, अरबी (घुईयां) भिन्डी, शलजम, लोकी, चुकन्दर, गाजर, शकरकन्द, आलू, रतालू, सोंठ, अदरक, सिंगाड़ा सूखा, गुड़, खशखास, अस्बगोल, या ईसबगोल, ढाक का गोंद, बरगद का दूध, बरगद की दाढ़ी, एक साल के संभड की जड़ आदि।

फलों में- मीठा आम, मीठा अंगूर मीठा अनार, केला, इन्जीर, मीठा सेब, नाशपाती, आलू बुखारा, लीची, अमरूद, खरबूजा, चीकू, आदि।

सूखे मेवों में- बादाम, पिस्ता, चिलगोजा, किशमिश, मुनक्का, काजू गिरी या खोपरा, जेतून, अख़रोट, खूबानी, फिन्दक आदि।

जानवरों से- तमाम हलाल परिन्दों का गोश्त और उनका मगज़ (भेजा) चूज़ा मुर्ग़, कबूतर, बटेर, तीतर, लवा , काज, मुरगाबी बतख़ और इनके अंडे लवा, जिट्टे का मगज़, ताज़ा मछली खासतौर पर रोहू आदि। गाय-भैंस का दूध दही, मक्खन घी, जवान बकरे का गोश्त, सिरी, पाए, कलेजी, गूदेदार हड्डी की यख़नी, जवान बकरे के ख़ुसिये (कपूरे)।

नोट:- बकरे के कपूरे हनफ़ियों के यहां मकरूह तहरीमी हैं दूसरे बाज़ मसलको में हलाल हैं।

मसालों में:- लोंग, काली मिर्च, दारचीनी, जावित्री, जायफल, इलायची,

और जाफ़रान (केसर) आदि।

बाह के लिए हानिकारक चीज़ें जिनके ज़्यादा इस्तेमाल से बचा जाय

हर प्रकार के खट्टे फल, अचार, चटनी, इमली, केत, सिर्का, नीबू, आम की खटाई, ज़्यादा मात्रा में चाय, काफ़ी, सोंफ, हरा धनियां आदि।

कुछ चीज़ों के खास फ़ायदे

छुआरा व खजूर- छुआरे व खजूर का कुव्वते बाह से खास सम्बन्ध है इसीलिए मुसलमानों में निकाह (विवाह) के मौके पर छुआरे बांटने का पुराना रिवाज चला आ रहा है। इसको चूसना प्यास को दूर करता है इसीलिए बहुत सी ताकत वाली दवाओं जैसे माजून आरदेखुर्मा व हलवों में शामिल किया जाता है।

जो औरत बच्चा जने उसके लिए ताज़ा खजूर से बेहतर कोई गिज़ा नहीं है। अगर ताज़ा न मिल सके तो सूखा ही सही।

खजूर से बेहतर अगर कोई और चीज़ होती तो अल्लाह पाक हज़रत मरयम को ईसा अलैहिस्सलाम (ईसामसीह) की पैदाइश के समय वही चीज़ खिलाते। कुरान पाक की सूरए मरयम में है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मरयम को हुक्म दिया कि खजूर का तना पकड़ कर अपनी तरफ़ हिलाओ तुम पर ताज़ा पकी खजूरें गिर पड़ेंगी इससे मालूम हुआ कि जच्चा के लिए खजूर से बेहतर

कोई गिजा नहीं है। हकीमों ने लिखा है कि खजूर खाने से नफ़ास (अन्दर की गन्दगी) खूब बहता है औरत के अन्दर गर्मी और ताकत आती है। खजूर रगों को नर्म करती है और पैदाइश के बाद दर्दों (AFTER PAINS) को दूर करती है।

शहद- अबू नईम ने बरिवायत हज़रत आयशा रज़ि0 बयान किया है कि रसूलुल्लाह (उन पर सलामती हो) को शहद बहुत प्यारा व अज़ीज़ था।

अल्लाह के रसूल को शहद इसलिए ज़्यादा पसन्द था कि कुरान में लिखा है कि इसमें लोगों के लिए शिफ़ा (सेहत) है और हकीमों (वैद्यों) ने इसके बेशुमार फ़ायदे लिखे हैं। सुबह निहार मुंह (खाली पेट) चाटने से बलगम दूर करता है पेट को साफ़ करता है फ़ुज़लात (बेकार अंश) को दूर करता है सुद्दे (गांठें) खोलता है। दिमाग को ताकत देता है और हरारत गरीजी VITAL FORCE को बढ़ाता है और कुव्वते बाह में हरकत पैदा करता है। मसाने की पथरी को दूर करता है और बन्द पेशाब को खोलता है। फ़ालिज व लकवे (पक्षा घात) के लिए फ़ायदामन्द है। रियाह (बाउ हवा) निकालता है और भूक लगाता है।

शहद हज़ारों किस्म के फूलों का निचोड़ है अगर सारी दुनियां के हकीम वैद्य मिलकर ऐसी चीज़ तैयार करना चाहें तो नहीं कर सकते। यह सिर्फ़ अल्लाह की शान है कि उसनें अपनें बन्दों के लिए कैसी उमदा चीज़ पैदा फरमाई।

दूध- अबू नईम ने हजरत इब्ने अब्बास रजि० से नकल किया कि पीने की चीज़ों में अल्लाह के रसूल (उन पर सलामती हो) को दूध सबसे ज्यादा अज़ीज़ व प्यारा था।

हकीमों ने लिखा है कि दूध कुव्वते बाह पैदा करता है और जल्द हज़्म होता है गिज़ा का बदल है मनी पैदा करता है चेहरे का रंग साफ़ और सुर्ख़ करता है। फुजलात (ख़राब अंशों) को निकालता है दिमाग़ को ताकत देता है।

लेहसन- इमाम जलालउद्दीन सियूती रहि0 ने अपनी किताब जमाउलजवामें हज़रत अली (अल्लाह उनसे रजी हो) से एक हदीस नकल की है कि रसूले ख़ुदा (उन पर सलामती हो) ने फ़रमाया है कि ऐ लोगों, लेहसन खाया करो, और इससे इलाज किया करो इसमें बीमारियों से शिफ़ा है।

इस हदीस की सेहत में कुछ उलमा को कलाम° है मगर हकीमों के नजदीक लेहसन में बहुत फ़ायदे हैं। यह वर्म (सूजन) दूर करता है (मासिक ख़ून) को खोलता है पेशाब जारी करता है पेट से हवा निकालता है। मरतूब व ठंडा मिजाज़ लोगों में कुव्वते बाह पैदा करता है और गर्म मिजाज़ वालों की मनी को खुश्क करता है । मेदे (पेट) और जोड़ों के दर्द को फ़ायदा पहुंचाता है चेहरे पर चमक-दमक पैदा करता है। सांस रोग और राशे (बदन हिलना) में मुफीद है मगर गर्भवती के लिए इसका ज़्यादा इस्तेमाल नुकसान करता है। वैदिक में इसके बेशुमार फ़ायदे लिखे हैं बल्कि इसको अमृत कहा गया है।

रसूले ख़ुदा (उन पर सलामती हो) ने इसको कच्चा खाकर मस्जिद में आने को मना किया है।

जाफरान या केसर:- दिल जिगर और मेदा (पेट) को ताकत देती है दूसरी दवाओं में शामिल करने से उनके गुण को बढ़ाती है। ज़बरदस्त काम शक्ति वर्धक है। दिमाग और आंखों की रोशनी के लिए बेहद मुफ़ीद है।

जायफल, जाविशी, दारचीनी:- कुव्वते बाह को बहुत बढ़ाने और उत्तेजना पैदा करने वाली है बुढ़ों के लिए असाये पीरी (बुढ़ापे की लाठी) का काम देती है पुट्ठों और जोड़ों के दर्द को भी मुफीद है।

फिल फिल दराज:- जिसको छोटी पीपल कहते हैं मेदा दिमाग और बाह को ताकत देती है निगाह को तेज़ करती है ज़्यादा बलगम से जो खराबी पैदा होती है उस को दूर करती है। दूध में ओंटा कर पीना फ़ायदा करता है।

खुश्बू सूंघना:- खुश्बू का इन्सान की रूह (आत्मा) से खास ताल्लुक है। इसका असर दिल पर बिजली की तरह एक दम होता है। खुश्बू तबियत में सुरूर व खुशी पैदा करती है इसी लिए शादी के मौके पर दुल्हन को फूलों के गजरे पहनाए जाते हैं और खुश्बू में बसाया जाता है। खुश्बू और बाह में गहरा सम्बन्ध है चुम्बक जैसी कशिश है। रसूले खुदा (उन पर सलामती हो) अपने सर और रीशे मुबारक (दाढ़ी) पर मुश्क (कस्तूरी) लगाया करते थे। लिखा है आपकी खिदमत में जब कोई खुश्बू प्रस्तुत करता था तो आप उसको कुबूल कर लेते थे और आपका कहना है कि अगर कोई तुमको खुश्बू दे तो उसको रद्द न करो।

ताक़त बढ़ाने वाली कुछ दवाएं

प्याज़ और उसके बीज (कलोंजी) दोनों ही ताक़त बढ़ाने में बेमिसाल हैं इनके अन्दर ज़रूरी विटामिन बहुत पाये जाते हैं।

1- धुले हुए उर्द की दाल एक किलो किसी कांच या चीनी के मर्तबान

में डालकर उस पर प्याज का अर्क (अगर सफेद प्याज़ हो तो ज़्यादा अच्छा है) इतना डालें कि दाल अच्छी तरह भीग जाए। एक दिन-रात भीगा रहने के बाद साये में सुखालें और इस तरह सात बार भिगोयें और सुखायें फिर आटे की तरह बारीक पीस कर रख लें और रोजाना 25 ग्राम यह आटा और इतना ही घी और इतनी ही मिसरी मिलाकर पाव डेढ़ पाव गर्म दूध के साथ सुबह को फांक लिया करें या चूल्हें पर रखकर खीर सी बनाकर 40 दिन इस्तेमाल करें इस बीच औरत से अलैहदा रहें फिर इसका असर देखें।

2- चने बड़े दाने के ऊपर लिखे तरीके पर सात दफा प्याज के अर्क में भिगोकर और सुखाकर आटा बनाकर एक तोला वह आटा 1 तोला घी 1 तोला मिसरी मिलाकर सुबह व रात के समय दूध के साथ खा लिया करें।

3- प्याज़ का अर्क 250 ग्राम और असली शहद 250 ग्राम को मिलाकर पकाएं जब अर्क जलकर केवल शहद बाकी रह जाये तो बोतल में भर लें। और 20-20 ग्राम थोड़ा गर्म पानी या चाय में डालकर पी लिया करें। यह ठन्डे मिजाज वालों के लिए ज़्यादा मुफीद है।

4- छुआरे और भुने हुए चने बराबर कूट कर आटे के समान कर लें और छान कर प्याज के अर्क में गूंधकर अखरोट के बराबर लड्डू बना लें। सुबह शाम एक-एक लड्डू खा लिया करें चाहें तो इसमें बादाम, पिस्ता और चिलगोजा भी मिला लें।

प्रमेह (जिरयान) व शीघ्र पतन (सुरत इन्जाल) के लिए

1- यह नुस्खा प्रमेह व शीघ्र पतन के लिए तर्जुबा किया हुआ है वीर्य ज़्यादा पैदा करता है और गाढ़ा भी करता है मगर कब्ज़ करता है इसलिए कब्ज़ दूर करने के लिए गुलकन्द या मुनक्का या कोई और कब्ज़ दूर करने वाली दवा भी इस्तेमाल करें।

2- देसी मुर्गी के 20 अण्डों को उबालकर उनके अन्दर की ज़र्दी (पीली गोली) सफेद नहीं, अच्छी तरह हाथों से मसल कर बुरादा कर लें। फिर 250 ग्राम शहद आग पर चढ़ाकर उसमें अच्छी तरह मिला लें फिर इसमें असली अक़रकरहा (जरा मुश्किल से मिलता है) लोंग व सोंठ 35-35 ग्राम बारीक करके कपड़े से छान कर इसमें मिला लें। और एक-एक तोला सुबह, शाम खाया करें। अगर इसमें 3 माशा जाफरान थोड़े क्योड़े के अर्क में घोलकर मिला ले तो क्या कहना।

3- **हलवा पंज बेजा:-** मुर्गी का एक अण्डा तोड़कर किसी बर्तन में डाल लें फिर उसी अण्डे के खोल के बराबर-बराबर गाजर का अर्क, प्याज का अर्क शहद और घी सबको मिलाकर धीमी आंच पर हलवा सा बनाकर खायें। कम से कम 21 दिन इस्तेमाल करें। खट्टी व बादी चीजों से परहेज करें। दही व मछली का इस्तेमाल भी बन्द रखें इस बीच संगत न करें। बूढ़े भी दुबारा जवानी की ताकत महसूस करेंगे।

4- इमली के बीज- जिन्हें चिगां कहते हैं ज़रूरत के अनुसार लेकर छाज (मट्ठा) में भिगो दें उसमें बीजों से दूना वजन लोहा (कीलें आदि) डाल दें। इस खास तरीके पर वह बीज 10-12 दिन में फूल कर फट जाएगी तब उनके ऊपर का छिलका दूर करके साये में सुखा लें। फिर खूब बारीक मैदा जैसा कर लें। और दुगुनी सफेद खांड मिलाकर सुबह, शाम 10-10 ग्राम गाय के दूध के साथ 21 दिन इस्तेमाल करें उम्र भर की शिकायत दूर हो जायेगी।

5- जब मनी पानी जैसी पतली हो जाए तो यह नुस्खा मनी को गाढ़ा और ज़्यादा मात्रा में पैदा करके ताकत बहाल करेगा।

सूखा सिंघाड़ा- और असगन्द नागौरी बराबर-बराबर मैदा जैसा बारीक करके 3-3 माशा सुबह शाम 1 पाव गाय के दूध के साथ इस्तेमाल करें।

6- सफेद कनैर- की जड़ का छिलका, (खाल) घुंघची सफेद, कोंच के बीज, 3-3 माशा लेकर सुर्मे जैसा बारीक पीस कर 2 तोला देसी मोम (शहद की मक्खी वाला) पिघला कर उसमें मिला लें। और खूब कूट-कूट कर मुलायम करके 96 गोली बना लें। और एक-एक गोली सुबह शाम दूध के साथ लें और दो गोली थोड़े से गर्म घी या तेल में हल करके (घोलकर) लिंग पर मालिश कर लिया करें। सात ही दिन में फायदा महसूस होगा मगर पूरा इस्तेमाल कर लें।

7- अण्डे के छिलके का भस्म- (कुश्ता) या कलई का कुश्ता भी इस बीमारी में फ़ायदा करता है।कुश्ते (भस्म) के नाम से डरें नहीं। हर कुश्ता नुकसान नहीं करता। 2 रत्ती अण्डे का कुश्ता 50 ग्राम दूध की मलाई या 25 ग्राम मक्खन में रख कर 2-3 हफ्ते रोजाना इस्तेमाल करें। इसी तरह कुश्ता

कलई 2 रत्ती माजून आरद सुर्मा (बनी हुई यूनानी दवाओं में मिलती है) में मिलाकर इस्तेमाल करें।

होम्योपैथी में इस बीमारी के लिए एसिड फास ACID PHOS मदर टिंक्चर 10-10 बूंद 1 चम्मच पानी में डाल कर खाने के बीच इस्तेमाल करें बहुत मुफीद है भूख भी बढ़ाता है।

स्त्रियों का प्रदर या ल्यूकोरिया

(सफेद पानी)

जिस तरह मर्दों को प्रमेह होता है उसी तरह औरतों को भी यह बीमारी होती है। गर्भाशय से एक चिपचिपी अण्डे की सफेदी जैसी रतूबत निकलती है जो कपड़े पर लगने से कपड़े में अकड़ाव पैदा कर देती है इसके कारण औरतों की कमर में दर्द रहता है बदन टूटता है। तबियत गिरी गिरी रहती है इसके लिए भी अण्डे का कुश्ता ऊपर लिखी तरकीब के अनुसार मुफीद है । गर्म मिजाज़ वाली औरतें गर्मी के मौसम में मलाई मक्खन के अतिरिक्त अनार का शरबत भी लें।

होम्योपैथी- में प्रदर के लिए OVA TESTA 3x (विलमार शोबे कम्पनी जर्मनी का बना) 1-1 टिकिया सुबह शाम 25 ग्राम दूध की मलाई या डेढ़ पाव दूध के साथ अगर जर्मनी न मिले तो B.T. (अमरीकन) 3-3 टिकिया सुबह शाम। सारी खट्टी चीजों से परहेज करें।

नोट:- गर्भाशय से निकलने वाले हर सिराव को प्रदर नहीं कहा जाएगा। गर्भाशय (बच्चे दानी) में सूजन होने की सूरत में भी एक पतला, मटमेला या गुलाबी आदि रंग का पानी आता है उसमें कुछ हल्की बदबू भी होती है इसमें ऊपर लिखी दवायें फ़ायदा न करेंगी।

गर्भाशय की सूजन का चिन्ह यह है कि माहवारी आने में कम या ज़्यादा दर्द भी होता है और अगर सूजन बहुत बढ़ गयी हो तो औरत को संगत के समय दर्द व तक्लीफ़ भी होती है। इसके लिए हमदर्द का मरहम "दाख़िलून" किसी बाई से इस्तेमाल करायें या अरन्डी के पत्ते पर अरन्डी का तेल चिपड़ कर और पत्ते को आग के सामने गर्म करके सोते समय पीड़ू पर बाधं लें। रात भर बांधे रहे। एक हफ़्ता में फ़ायदा होगा। खाने में सुबह होम्योपैथिक दवा बैलाडोना 200 और सोते समय सीपिया 200 खा लिया करें। सारी खट्टी बादी चीज़ें ख़ास कर चावल, बैगन, गोभी, उर्द की दाल का परहेज करें।

क़ुव्वते बाह (काम शक्ति) बढ़ाने की एक ख़ास तरकीब

शक्ति वर्धक दवाओं में संखिया का बड़ा महत्व है मगर विष (ज़हर) होने के कारण इसका इस्तेमाल हर एक के बस की बात नहीं है। हम नीचे बिल्कुल बेजरर (अहानिकारक) और रासायनिक तरकीब लिख रहे हैं जो हर मिजाज़ वाला इस्तेमाल कर सकता है। इससे दूध घी ख़ूब हज़्म होता है ताक़त और इम्साक के लिए जाड़ों का मौसम अच्छा है।

सफेद संखिया बारीक पीस कर रख लें और करीब दो रत्ती आग के अंगारे पर डाल दें। जैसे ही धुंआ उठे उस पर एक खाली गिलास औंधा रख दें। सारा धुंआ गिलास में जम जायेगा। अब इस गिलास में गर्म दूध डालकर पी जाएं। दूध, घी, मक्खन आदि खूब इस्तेमाल करें। खटाई व लाल मिर्च का परहेज करें।

नोट:- धुएं से आंखों को बचाएं। दूध में मीठा मिला सकते हैं।

रुकावट व आनन्द बढ़ाने वाली दवाएं

कुछ शौकीन मिजाज़ लोग रुकावट बढ़ाने वाली दवाओं के बलबूते पर मजा हासिल करना चाहते हैं और यह भी चाहते हैं कि औरत भी खुश होकर उनका दम भरती रहे। इसलिए यह बताना ज़रूरी है कि अगर ऐसी दवाएं लगातार इस्तेमाल की जाएं तो उनसे बहुत नुकसान का अन्देशा है क्योंकि ऐसी दवाएं मनी को सुखाने वाली और नशावर (नशे वाली) चीज़ों से तैयार की जाती हैं जो शरीर को नुकसान पहुंचाती हैं कभी-कभी ऐसी दवा का इस्तेमाल करने में तो कोई हर्ज नहीं है मगर इसकी आदत न डाली जाए इसलिए ऐसी दवाओं के इस्तेमाल के लिए मना किया जाता है क्योंकि एक बार के इस्तेमाल से इसकी आदत हो जाती है। अगर किसी खास मौके पर ऐसी दवा का इच्छुक हो तो उसके लिए यह नुस्खा तैयार कर लें।

शिंगरफरूमी 3 माशे, अफीम कच्ची 3 माशे, अजवाइन खुरासानी 6 माशे, धतूरे के कच्चे फल का सवा तोला अर्क में अच्छी तरह खरल करें और चनें के बराबर गोली बना लें। एक गोली डेढ़ पाव या आधा सेर के दूध के साथ

सम्भोग के समय से 2 घन्टे पहले खा लें।

ज़रूरी नोट:- इम्साक (रुकावट) वाली दवा ऐसे समय पर खाना चाहिए जब कि खाना हज़्म हो चुका हो यानी खाने के 3-4 घन्टे बाद उस दिन खाने में ज़्यादा नमक मिर्च और खटाई बिल्कुल न हो । संगत के बाद कोई तर गिज़ा (चिकनाई वाली) या दूध मलाई जरूर इस्तेमाल करें जिससे खुश्की दूर हो जावे।

2- हर प्रकार के सन्दल पर बने इत्र (सेन्ट नहीं) भी आनन्द वर्धक होते हैं खास तरीके से इत्रे फितना सुपारी पर लगाकर संगत करें तो औरत आशिक हो जाए।

3- इत्र मोतिया 3 माशा, इत्र नरगिस 3 माशा, इत्र हिना मुश्की 3 माशा, अफीम 4 माशा, सुहागा 3 माशा, काफूर 3 माशा और माजूफल (जो घुना हुआ सूराखदार न हो) 6 माशा, सादा वैसलीन बिना बदबू वाली 5 तोला। पहले सूखे माजू को सुर्मे जैसा बारीक पीस लें फिर तमाम इत्रों में बाकी सारी दवाएं हल करके वैसलीन में मिलाकर रख लें। ज़रूरत के समय लिंग पर मालिश करके और सुपारी पर भी लगाकर संगत करें रुकावट और लज़्ज़त (आनन्द) दोनों बातें पैदा होंगी।

जिंसी बीमारियों Sexual Diseases (लैंगिक रोग) की होम्योपैथिक दवाएं

होम्योपैथिक दवाएं आम तौर पर बीमारी के नाम से नहीं बल्कि अलामत (लक्षणों) के अनुसार हर मरीज़ के लिए अलग-अलग होती हैं चाहे मर्ज़ एक

ही हो। नीचे लिखे इशारों के अनुसार दवा इस्तेमाल करें।

नामर्दी पर इशारे (संकेत)

1- किसी गहरी चोट की वजह से नामर्दी उत्पन्न हुई हो तो ARNICA1M.
2- बूढ़े आदमियों में नामर्दी हो तो LYCOPODIUMC CM.
3- हस्त मैथुन (जलक) के कारण पैदा हुई नामर्दी के लिए BUFORANA 200 USTILAGO 200 PHOSPHORIC ACID 200
4- शादी से डरने वाले जिनकी याददाश्त (स्मरण शक्ति) कमज़ोर हो और अपने आप पर भरोसा न हो दिल में यह डर बैठ जाए कि वह संगत करने योग्य नहीं हैं ANACARDIUM 200
5- सूजांक (GONORRHOEA) की वजह से पैदा हुई नामर्दी के लिए AGNUS CAST. 10 M.
6- ऐसे नेक चलन कुंवारे जो काफी उम्र बीत जाने पर शादी करें और अपने को स्त्री के योग्य न पाएं CONIUM 10 M.
7- अधिक सम्भोग करने के कारण नामर्दी पैदा हो गई हो तो PHOSPHOROUS 1M. और CONIUM 1 M.
8- पूर्ण नामर्दी-सम्भोग कामेच्छा बिल्कुल न हो शहवानी ख्याल (सहवास के विचार) से भी उत्तेजना पैदा न हो लिंग ढीला ढाला ही बना रहे स्त्री के करीब पहुंच कर भी लिंग में उत्तेजना व सख्ती पैदा न हो तो NEUPHERLUT Q
9- जलक (हस्त मैथुन) के कारण पैदा हुई नामर्दी कामेच्छा अधिक लेकिन रुकावट बिल्कुल न हो शरीर से शरीर मिलते ही तुरन्त वीर्य निकल जाए और पतन हो जाए CARBONEUM SULF 3X. दिन में

3 बार

10- अधिक सम्भोग करने के आदी HABITUAL (स्वाभाविक) और पुराने पापी जिसमें सम्भोग शक्ति तो न हो परन्तु औरतों की इच्छा बहुत ज़्यादा हो सामने से गुजरने वाली औरतों पर बुरी नजर डालें, दिल ही दिल में मजा लें और वीर्य निकल जाए। कच्ची नींद की हालत में तो लिंग में सख्ती मौजूद हो मगर जागने पर समाप्त हो जाए।
सम्भोग का इरादा करने पर तो सख्ती पैदा हो और न वीर्य पतन हो योनांगो पर ठंडा पसीना आए- CLADIUM CM.

नोट:- इस दवा के मरीज़ की यह भी विशेषता है कि उसके शरीर से जो पसीना निकलता है वह मीठा होता है इसलिए उसके शरीर पर मक्खियां बहुत बैठती हैं। इस लक्षण का भी ध्यान रखें।

11- किसी अन्दरूनी दुख व गम का शिकार-किसी अतिप्रिय दोस्त की जुदाई का असहनीय गम और सदमा-मरदाना कुव्वत (काम शक्ति) को समाप्त कर दे तो IGNATIA 10 M की केवल एक ही खुराक ऐसे मरीज को नया जीवन प्रदान करेगी।

नामर्दी की कुछ विशेष दवाएं

एगनसकेस्टस AGNUS CASTUS 10 M

अगर किसी को शुरू जवानी में हस्त मैथुन या इग़लाम (समलिंगी) की आदत रही हो या बहुत ज़्यादा सम्भोग करके अपने को तबाह व बर्बाद कर लिया हो चेहरा पीला आंखें अन्दर को धंसी हुई, हाथ पांव में जान न हो आसाबी कमजोरी

(स्नायु की शिथिलता) पैदा हो गई हो और इसके साथ साथ लिंग छोटा ढीला व कमजोर पड़ गया हो उसकी नई व खूबसूरत बीवी उसके लिंग में गर्मी व उत्तेजना पैदा न कर सके और पैदा भी हो तो खास समय पर एक दम समाप्त हो जावे तो ऐसे दुखी परेशान व दया योग्य लोगों को इस दवा की 2-4 ऊँची खुराकें नया जीवन प्रदान करेंगी। दस हजार नम्बर की एक खुराक लेकर साथ में कोई तिला व शक्ति वर्धक टिन्कचर भी प्रयोग करें।

सेलीनम SELENUM CM & 3X Tr.

पुरुषों के योनांगों (आज़ाये तनासुल) पर इस दवा का खास असर होता है। लिंग में शक्ति कम या बहुत देर में पैदा होती हो, मनी बहुत जल्द निकल जाती हो जिससे मरीज में बहुत गुस्सा व कमजोरी आ गई हो, काम इच्छा तो बहुत परन्तु करने की क्षमता न हो। बैठे-2 या चलते फिरते पाखाना करते समय और नींद में वीर्य निकल जाता हो, मनी इतनी पतली हो गई हो कि उसमें कुदरती बू भी न रही हो और न कपड़े में अकड़न पैदा होती हो ऐसी दशा में इस दवा की। लाख पावर की खुराक पहले दिन खा कर इसी को 3X पावर जो सफूफ (विचूर्ण) में होगी, दिन में चार बार कुछ हफ्ते लगातार स्तेमाल करें।

आरकाईटीनम या टेस्टी ORCHINITUM OR TESTE 3X

बुढ़ापे में कुव्वते बाह की कमी को इस दवा से काफ़ी हद तक बढ़ाया जा सकता है। यह दवा सफफू (विचूर्ण) या टिकिया में मिलती है दिन में 3-4 बार कुछ हफ्तों लगातार खायें।

लाइकोपोडियम LYCOPODIUM CM

डा० नेश का कहना है कि पुरुषों के जननांगों (आलाते तनासुल) पर इसका असर बहुत ज़्यादा होता है अगर कोई बूढ़ा आदमी दूसरी या तीसरी शादी करे और समय पर अपने को नाकारा महसूस करके बहुत शर्मिन्दा और निराश हो तो लाईकोपोडियम की एक बहुत बड़ी ताकत (एक लाख) लेकर कुछ ही दिन में पति-पत्नी दोनों ही डाक्टर के अहसानमन्द हो जाते हैं। इसी तरह वह नौजवान जिन्होंने गलत तरीकों से अपने आपको बरबाद कर लिया हो चाहे हस्त मैथुन द्वारा या बहुत ज़्यादा संगत करने से। बस एक खुराक खा लेने से काफी दिनों के लिए संगत योग्य हो जाते हैं।

अश्वगन्धा अर्थात विथेनिया सोमनीफेरा WITHANIA SOMNIFERA Q

यह दवा शीघ्र पतन-नामर्दी सुस्ती और कमजोरी दूर करने के लिए मुफीद है मदर टिंकचर की 10-10 बूंद दिन में 3 बार।

सेलेक्स नाइगरा SELEX NIGRA Q

इस दवा का मदर टिंकचर जरूरत से ज़्यादा बढ़ी हुई शहवत (कामवासना) को ज़रूरत के अनुसार करता है और कुव्वते बाह को भी बढ़ाता है। अधिक स्वप्न दोष (एहतलाम) और जलक (हस्त मैथुन) के मरीजों के लिए भी मुफीद (लाभदायक) है। खुराक़ 20 से 30 बूंद तक सुबह-तीसरे पहर और रात सोते समय।

फासफोरिक ऐसिड PHOSPHORIC ACID Q

इस दवा का मदर टिंकचर भी जिस्मानी (शारीरिक) कमजोरी दूर करने व कुव्वते बाह (काम शक्ति) बढ़ाने के लिए मुफीद है। अधिक सम्भोग, हस्त मैथुन या समलिंगी से वीर्य काफी मात्रा में निकल जाने से मरीज़ सम्भोग योग्य न रहे। चक्कर दिमागी थकावट, कमर में दर्द टांगों में भारीपन पैदा हो जाए नींद में या पेशाब पाखाना करते समय वीर्य निकल जाता हो। प्रमेह व स्वप्न दोष दोनों में मुफीद है लेकिन शर्त यह है कि मरीज़ कुछ हफ़्ते सम्भोग न करने का इकरार करे। अगर ऐसा न करेगा तो कोई लाभ न होगा। यह दवा दस-दस बूंदें एक तोला पानी में मिलाकर खाने में या खाना खाने के तुरन्त बाद दिन में 2 या 3 बार।

योहिमबीनम YOHIMBINUM Q

इस दवा के मदर टिंकचर की बड़ी खुराकें (15-20) बूंदें इम्साक (रुकावट) बढ़ाती हैं और लिंग में उत्तेजना पैदा करती है। इसलिए नामर्दी को टेमप्रेरी तौर पर (कुछ समय) ठीक करने में मददगार होती है। दस-दस बूंदें दिन में तीन बार लगातार कई हफ़्ते इस्तेमाल करने से ताकत व रुकावट बढ़ जाती है मगर इस दवा को केवल अय्याशी के लिए इस्तेमाल न किया जाए। यह दवा जर्मनी की बनी इस्तेमाल करें। अगर इस दवा के इस्तेमाल से पेशाब करने में दिक्कत या जलन पैदा हो तो कुछ दिन को दवा बन्द करके फिर दुबारा कुछ कम खायें।

डमियाना या टरनेरा DAMINA OR TURNERA Q

इस दवा का असर स्त्री व पुरुष दोनों ही के गुप्त अंगों व जननेन्द्रियों की कमजोरी को दूर करता है। स्नायों की शिथिलता (आसाबी कमजोरी) से पैदा हुई नामर्दी में फायदा करता है। अगर औरतों में काम इच्छा न हो तो उसे भी उत्तेजित अथवा पैदा करता है। पुरुषों के वीर्य के शुक्राणु (sperms) की कमी व कमजोरी को भी दूर करके गर्भ स्थापना योग्य, हमल ठहराने लायक बनाता है। नौजवान लड़कियों में रुके हुए (हैज) मासिक खून को जारी करता है। इस दवा के मदर टिंकचर की 10-15 बूंदें दिन में 3 बार।

एवेना सटाइवा AVENA SATIVA Q

अधिक सम्भोग, वीर्य का पतला होना, प्रमेह और हस्त मैथुन से पैदा हुई स्नायों की कमजोरी और नामदर्दी को दूर करता है। 15-15 बूंदें दिन में तीन बार।

सहवास (शहवत) की कमी व ज़्यादा होना

जिस तरह बाज मर्दो में उसी तरह बाज औरतों में काम इच्छा बहुत ही कम या बिल्कुल नहीं होती और किसी-किसी में ज़रूरत से ज़्यादा होती है।

अगर मियां बीवी की तबीयतों का हाल एक दूसरे के विपरीत (खिलाफ)

हो यानी मर्द में तो शहवत बहुत ज़्यादा और उसकी बीवी में बहुत कम हो या इसके Opposite (विरुद्ध) हो तो ऐसे जोड़ों का निबाह बहुत मुश्किल हो जाता है और अगर दिल में खुदा का डर न हो तो ऐसे मर्द दूसरी औरतों से नाजायज़ सम्बन्ध स्थापित कर लेने से नहीं चूकते हैं। इसी तरह ज़्यादा काम इच्छा रखने वाली औरतें भी अपने पति की कमजोरी के कारण दूसरे मर्दों से अपनी ख्वाहिश पूरा करने की राहें तलाश कर लेती हैं और कमाई के चक्कर में ज्यादातर घर से बाहर रहने वाले मर्दों को पता भी नहीं चलता इसीलिए शरीयत (इस्लामी संविधान) में पर्दे की सख्त ताकीद है और नामेहरमों • से मेल जोल को सख्ती से रोका गया है बल्कि औरतों के लिए नामेहरम मर्दों से मीठे लहजे में पर्दे के पीछे से भी बातें करना और खुश्बू लगाकर, बजने वाला जेवर पहनकर गैर (अपरिचित) मर्दों के सामने से बेनकाब व बेहिजाब (बेपर्दा) निकलना भी मना है। मगर आजकल हमारी औरतें न सिर्फ बेपर्दा बल्कि पूरे बनाव सिंघार (श्रंगार) के साथ चुस्त और आधा सीना व बाहें खुला लिबास पहनकर बाजारों में खरीद फरोख्त करती फिरती हैं जिसके नतीजे में कभी-कभी इस्मतदरी (बलात्कार) की घटनाएं भी सुनने में आती रहती हैं।

अतः (इसलिए) अगर मर्द में शहवत ज़्यादा हो और अपनी बीवी से ज़रूरत पूरी न होती हो तो उसके लिए शरीयत में दूसरे निकाह की इजाज़त इस शर्त के साथ दी है कि वह दोनों बीवियों में इंसाफ• कायम रख सके। मगर

• वे लोग हैं जिनसे औरत का निकाह हो सकता है।

• इंसाफ से मतलब यह है कि दोनों को एक ही तरह का खाना कपड़ा और बराबर का खर्च दे अगर एक हफ्ते एक बीवी के यहां सोए तो दूसरे हफ्ते दूसरी बीवी के यहां सोए।

अब हिन्दुस्तानी व पाकिस्तानी समाज में दो स्त्रियां रखना बुरा समझा जाने लगा है इसलिए ज़्यादा शेहवत रखने वाले मर्द औरतों को ऐसे भोजन नहीं खाना चाहिए। जो ज़्यादा शेहवत और जज़्बात में हैजान (Sensation) पैदा करते है। जैसे गोश्त अण्डा मछली ज़्यादा मिर्च गर्म मसाले आदि और ठंडी चीजें इस्तेमाल करनी चाहिए और अगर शहवत में कमी हो तो ऊपर लिखी गर्म चीज़ें इस्तेमाल करनी चाहिए। इसके अलावा नीचे लिखी दवाएं भी इसके लिए मुफीद हैं।

सेलेक्स नाइगरा SALIX NIGERA Q

यह दवा बढ़ी हुई शहवत को कम करके सामान्य बनाती है। मदर टिंकचर की 20-30 बूंदें 1 तोला पानी में मिलाकर दिन में तीन बार।

औरीगेनम ORIGANUM Q

अधिक इच्छा को कम करने के लिए हस्तमैथुन की आदत छुड़ाने के लिए मुफीद है मदर टिंकचर 15-16 बूंद दिन में 3 बार।

पिकरिक एसिड PICRIC ACID 30

पुरुषों में अधिक काम इच्छा को कम करती है। यह दवा 30 नम्बर में दिन में 3 बार । कुछ हफ्ते इस्तेमाल के बाद यही दवा 200 नम्बर में हर तीसरे दिन एक खुराक।

कैन्थेरिस CANTHERIS 30

अधिक काम इच्छा जिसके कारण लिंग में ज़्यादा उत्तेजना से नींद में बाधा पड़े। और सम्भोग के समय पेशाब की नली में जलन महसूस हो। 30 नम्बर में दिन में 2-3 बार।

फासफोरस PHOSPHORUS IM

तबियत में शहवानी उकसाहट (EXITEMENT) सम्भोग की न रुकने वाली इच्छा परन्तु लिंग में कमजोरी शिथिलता हो और सम्भोग के समय जल्द ही पतन हो जाए। इस दवा की एक हजार नम्बर की एक खुराक लेकर नतीजे का इन्तजार करें। अगली खुराक 2-3 हफ्ते बाद ही लें। यह दवा जल्दी जल्दी और ज़्यादा खुराकों में न ली जाए।

कालीबिरोमेटम 6- KALIBROMATUM 6

यह दवा हद से बढ़ी हुई काम इच्छा को कन्ट्रोल करती है नौजवानों में रात के समय इतनी उत्तेजना हो जो उनकी नींद हराम कर दे। इसी तरह औरतों में डिम्बाशय (बच्चे दानी) में तेहरीक के कारण बढ़ी हुई काम इच्छा दिन में 3-4 खुराकें।

हायोसाइमस HYOCYMUS Q

इतनी ज़्यादा व ग़ज़बनाक काम इच्छा कि मरीज बिला शर्म व लिहाज अपने लिंग को पकड़े और नंगा कर ले और बुखार की हालत में अपने लिंग से

खेला करें। मदर टिंकचर 10-10 बूंद दिन में 3-4 बार।

स्त्रियों में काम इच्छा न होने, कम होने, या संगत से घृणा (नफ़रत) दूर करने वाली दवाएं

औरतों में दबी हुई काम इच्छा को उभारने या बढ़ाने के लिए नीचे लिखी दवाएं इस्तेमाल करें।

सिबल सेरोलुटा SABALSERULATA IX

इसके इस्तेमाल से दबी हुई काम इच्छा उभर आती है। और बिल्कुल ही न हो तो पैदा हो जाती है। 1X शक्ति में 5.5 बूंदें दिन में 3-4 बार। इस दवा में यह भी गुण है कि नौजवान लड़कियों अथवा औरतों के कम उभरे हुए स्तनों को भी बढ़ा देती है। इस उद्देश्य (मक़सद) के लिए यह दवा बजाए 3x 1x के जाए 3x शक्ति से इस्तेमाल करें।

डमियाना DAMIANA Q

ऐसी औरतें जिनकी इच्छा समाप्त हो गई या सर्द पड़ गई हो। उसको दूर करती है। नौजवान लड़कियों में रुके हुए मासिक खून को जारी करती है और मर्दों को भी ताक़त देती है। 10-10 बूंद दिन में 3 बार।

सीपिया SEPIA 200

कुछ औरतें काम इच्छा होते हुए भी सम्भोग से नफ़रत करती अथवा कतराती हैं। जिसका कारण यह है कि उनके गर्भाशय (बच्चेदानी) में सूजन होती है और उनको सम्भोग के समय बहुत तकलीफ़ होती है यह दवा 200 शक्ति में रोजाना खिलाएं। चावल, बेंगन उर्द की दाल आदि बादी चीजों से परहेज कराएं।

नेट्रमम्योर NAT. MUR

कुछ औरतों की योनि में इतनी खुश्की हो जाती है कि उन्हें संगत के समय पीड़ा के कारण बहुत बुरा महसूस होता है। जिसकी वजह से संगत से नफ़रत हो जाती है। ऐसे मरीज़ को नेट्रमम्योर दस हजार शक्ति की एक खुराक खिलाकर 3 दिन के लिए खाने में नमक बन्द कराएं। तीन दिन बाद नेट्रमम्योर 30X दिन में तीन बार खिलाएं।

ओनोसमोडियम ONOSMODODIUM CM

यह दवा पूर्ण रूप से समाप्त हो जाने वाली काम इच्छा को दुबारा पैदा करती है एक लाख शक्ति में एक खुराक लेकर 3 दिन बाद यही दवा 30 शक्ति में दिन में 3 बार।

औरतों में काम इच्छा को कम करने वाली दवाएं

एमबराग्रशिया AMBRAGRASIA 200

ऐसी काम इच्छा की ज्यादती में जो दीवानापन की हद तक पहुंच जाए।

यह दवा 200 शक्ति में हर तीन दिन बाद एक खुराक लें।

पिलाटीनम PLATINUM 200

सम्भोग की न रुकने वाली इच्छा जो योनि में खुजली व सरासराहट से पैदा हो अप्राकृतिक कार्य को जी चाहे। यह दवा 200 शक्ति में हर तीसरे चौथे दिन एक खुराक।

कैनथेरिस CANTHARIS 200

योनि में सूजन व खुजली के साथ सम्भोग की बहुत तेज इच्छा, पेशाब की नली में जलन का एहसास। केनथेरिस 200 तीसरे चौथे दिन एक खुराक।

म्योरेक्स MUREX 3X

अगर मरीजा डिम्बाशय की गर्दन में ऐसी तपकन महसूस करें जो काम इच्छा में उथल पुथल पैदा कर दे और योनि को जरा सा छू देने से काम इच्छा बहुत बढ़ जाए। म्यारेक्स 3x शक्ति में दिन में तीन चार बार।

हियोसाइसस HYOCYMUS 3X

औरतों में काम इच्छा का दीवानापन। मरीज़ अपने गुप्त अंगों को नंगा कर दे और बार-बार उस जगह हाथ ले जाए इश्किया व कामोत्तेजक (काम इच्छा भड़कने वाले) गीत गाए और बेहूदा व अश्लील कार्य करे 3x शक्ति में

हर 2-3 घण्टे बाद।

नोट:- यह दशा कभी-कभी प्रसूत व तेज बुखार में हो जाती है।

ओरीगेनम ORIGANUM 3X

औरतों में हर प्रकार की काम इच्छा के जोश को इस दवा से ठीक किया गया है मरीजा सम्भोग के सपने देखे और हर समय इन्ही ख्यालों में रहे। स्तनों व निपिल में सूजन व खुजली हो। 3x शक्ति में दिन में 3-4 बार।

ज़िनकम मैटेलीकम ZINCUM MET

औरतों में सम्भोग की न रुकने वाली इच्छा जो रात में कई बार हो। जो योनि को उंगली से छेड़ने पर मजबूर करे 3 x विचूर्ण दिन में 3-4 बार और यही दवा 200 शक्ति में, रात सोते समय।

काम शक्ति वर्धक (मुकव्वीए बाह) होम्यो मिक्सचर

यह मिक्सचर हर प्रकार की काम इन्द्रियों की कमजोरी चाहे हस्तमैथुन से पैदा हुई हो अथवा अधिक सम्भोग, प्रमेह आदि से उत्पन्न हुई हो हर हाल में लाभदायक है-

1- अशोगन्धा 10 बूँद, याहिम वीनसे 5 बूँद, एसिड फास 3 बूँद एक तोला

पानी में मिलाकर ऐसी तीन खुराकें रोजाना-हर दवा मदर टिंकचर में हो।

2- सेलेक्स नाइग्रा-अवैना सटाइवा-डमियाना 10-10 बूंदें दिन में 3 बार हर दवा मदर टिंकचर में हो।

3- एगनस कास्टस अशोगन्धा (TRIBULUS)
टरनेरा-हर दवा टिंकचर में हो-दिन में तीन बार। 10-10 बूंद

4- सेलीनम 3x, टेस्टी 3x कैलेडियम सल्फ 3x टिटेनियम 3x, चारों विचूर्ण (पावडर) यह शीघ्र पतन के लिए ज़्यादा लाभदायक है तीनों मिलाकर 5-5 रत्ती दिन में 3 बार।

स्वप्नदोष (एहतलाम) हो जाना

आजकल यह बीमारी नौजवानों और विशेष कर विद्यार्थियों में ज़्यादा पाई जाती है। मरीज सपना देखत है कि वह किसी लड़की के साथ ....है और सोते में वीर्य पतन हो जाता है और आंख खुल जाती है। बीमारी ज़्यादा बढ़ जाने पर मरीज को तुरन्त पता नहीं चलता है।

जिस आदमी की शादी न हुई हो उस आदमी को महीने में एक दो बार स्वप्नदोष होता हो तो कोई बीमारी नहीं है क्योंकि शरीर में मनी तैयार होकर मनी की थैली में जमा होती रहती है और जब मनी ज़्यादा हो जाती है तो निकल जाती है ऐसे स्वप्नदोष से कोई कमजोरी व नुकसान नहीं होता है मगर यही चीज ज़्यादा हो जाए 4-6 दिन बाद या रोजाना या एक ही रात में दो-दो बार होने लगे तो यह बीमारी बन जाती है।

1- मरीज़ को चाहिए कि पेशाब करके और ज़्यादा अच्छा यह है कि बावजू (मुंह हाथ और पैर धोकर) सोयें और सुबह को बहुत जल्द बिस्तर छोड़ दें। देर तक सोना ठीक नहीं है।

2- हकीम जालीनूस का कहना है सीधी करवट लेटने से स्वप्नदोष कम होता है और सुन्नत भी है। पट (उल्टा) तो कभी नहीं सोना चाहिए।

3- रात का खाना सोने से 3-4 घन्टे पहले और जरा कम ही खाना चाहिए।

4- स्पन्ज के गद्दों या नर्म बिछौनों पर या ढीली चारपाई पर न सोयें विचार (ख्यालात) पाक रखें। सिनेमा आदि न देखें। नाविल (उपन्यास) गन्दी किताबें न पढ़ें।

5- सोते समय गर्म दूध न पियें। ठन्डा या हल्का गर्म पियें।

दवाएं

1- अगर मरीज़ को एहतलाम सुबह के करीब शहवानी ख़ुवाबों (सहवासा सपने) के साथ होता हो। हमेशा कब्ज़ रहता हो। हाजमा खराब रहे। ज़्यादा गोश्त और चटपटी चीज़ों का शौकीन हो तो रोजाना रात को नक्सवोमिका NUX VOM 200 सोते समय खा लिया करें।

2- अगर बगैर किसी एहसास के वीर्य निकल जाता हो, हाथ पांव के तलवे जलते हों। फोते लटक गये हो। अण्डों का शौक हो तो रोजाना सोते समय सलफर SULPHER 200 खाया करें।

3- ऐसे मरीज जिनका मसाना (मूत्राशय)कमजोर हो पेशाब जल्दी-2 व करते समय पेशाब की नाली में टीस हो। पेशाब की बूँदें पेशाब की नाली में रह जाएं रात में स्वप्न दोष हो जाता हो तो थूजा THUJA मदर टिंकचर दस-दस बूँदें सुबह व सोते समय।

4- हर प्रकार के स्वप्न दोष के लिए डेजी टेलिन DEGTALIN 2X मुफीद है इसका विचूर्ण चार-चार रत्ती दिन में तीन बार।

होम्योपैथिक दवाओं के इस्तेमाल का तरीक़ा

होम्योपैथिक दवाएं मूल्य अर्क (टिंकचर) व पुटेन्सी वाली दवाएं जो तरल (Liquid) में और विचूर्ण (सफ्फ़ू या पाउडर) में आती हैं। टिंकचर तो वैसे ही पानी में डालकर लिए जाते हैं। और यह ज़्यादा मात्रा में (पांच-दस-पन्द्रह बूँद) लिए जाते हैं। पुटेन्सी वाली दवा एक दो बूँद प्रति खुराक यही दवा शकर की गोलियों व सुगर आफ मिल्क में डालकर भी दी जाती हैं। और विचूर्ण दवा की कोई-कोई कम्पनी टिकिया भी बना देती है। जिस हालत में भी मिले इस्तेमाल करें। और किसी विश्वसनीय होम्योपैथिक स्टोर से खरीदें। ऊँचे नम्बर की दवाएं जर्मनी या अमरीका की बनी ही इस्तेमाल करें।

एक नम्बर से 30 नम्बर तक की दवाएं ताकतें (Low potency) कहलाती हैं यह दिन में तीन-चार खुराकें रोजाना ली जाती हैं। 200 नम्बर की दवाएं अधिकतर 3-4 दिन में। खुराक ली जाती है। और ज़रूरत हो तो जल्दी भी दुहरा सकते हैं हजार नम्बर की दवा 8-10 या 15 दिन बाद दुहरायें। दस हजार नम्बर महीना डेढ़ महीने बाद और एक लाख नम्बर की 5-6 माह बाद अगर ज़रूरत हो तो इससे पहले भी दुहरा सकते हैं।

होम्योपैथिक दवा खाते वक्त ज़बान बिल्कुल साफ हो। गुटका, पान,

तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट खाने पीने वाले जबान को खूब अच्छी तरह साफ कर लें फिर दवा को ज़बान पर डालकर चूस लिया करें। और दवा के इस्तेमाल के बाद 15-20 मिनट आगे पीछे कुछ न खाएं।

यह ख्याल बिल्कुल निराधार है कि पान, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, लेहसन, प्याज खाने वालों पर यह दवा असर नहीं करती। दवा के इस्तेमाल से कुछ देर आगे पीछे कच्ची प्याज, कच्चा लेहसन, हींग, काफूर, पिपरमेन्ट इत्यादि का परहेज रखें।

अगर आपको इस किताब में लिखी किसी दवा के इस्तेमाल का तरीका समझ में न आए तो किसी होम्योपैथिक डाक्टर से पूछलें या जवाबी खत भेज कर हमसे पूछ लें। अगर आपको अपने यहां कोई दवा न मिल रही हो तो हमारे यहां से मंगवा सकते हैं मगर उसके लिए मनी आर्डर के साथ कम से कम दस रूपये का मनी आर्डर भी आना ज़रूरी है।

इन दवाओं के इस्तेमाल के साथ किसी खास परहेज की ज़रूरत नहीं है। बस हर प्रकार की खटाई, अचार, लाल मिर्च आदि जो पहले बताई जा चुकी है। और सम्भोग से रुके रहने को भी समझा दिया गया है।

औरत पर क़ुदरत हासिल करने के लिए एक कुरानी अमल

हज़रत थानवी रहमतुल्ला अलैहि की पुस्तक आमाले कुरआनी से:-
हज़रत इमाम हसन बसरी रहि० से किसी ने कहा कि एक आदमी ने निकाह

किया मगर वह अपनी औरत पर कादिर नहीं हो सका (संगत में असफल रहा) तो आपने मुर्गी के दो उबले हुए अण्डे मंगवाए और उनका छिलका उतार कर एक पर कुरान पाक की सूरए जारयात (पारा 27) की आयत नं 47

"वस्समाआ बनैनाहा..............पूरी आयत लिखी और मर्द को खाने को दिया और दूसरे अण्डे पर उसकी अगली आयत नं0 48 "वल अरज़ा फरशनाहा (पूरी आयत) लिखी वह औरत को खिलाने को बताया और कहा अब मतलब हासिल करो अत: वह शख़्स कामयाब हुआ।

कुरान व हदीस की बरकतें व असर अपनी जगह पर मुसल्लिम है मगर उनसे फायदा हासिल करने के लिए उन पर पूरा यकीन (विश्वास) भी ज़रूरी है। अगर उसमें कमी या शक होगा तो फिर कोई फायदा न होगा। एक मुहददिस के पुत्र ने एक हदीस में पढ़ा कि खुंबी (पहाड़ी इलाकों में पैदा होने वाली एक सब्जी) का अर्क आँख में डालने से आंख की तकलीफ दूर हो जाती है। उनके पुत्र के गुलाम की आंख में तकलीफ थी अत: आज़माने के तौर पर अपने गुलाम की आंख में खुंबी का अंर्क डाला तो उसकी तकलीफ और बढ़ गई। इन पुत्र ने अपने पिता (मुहददिस साहब) को यह बात बताई तो उन्होंने पूछा कि किस नीयत से डाला था। जवाब दिया कि हदीस की बात को आज़माने के लिए तो मुहददिस साहब ने कहा कि तुझको हुजूर नबी करीम (उन पर अल्लाह की सलामती हो) की हदीस पर विश्वास न था। यह उसकी सज़ा है। इस पर उनके पुत्र ने तौबा की (अल्लाह से क्षमा चाही) और सही नीयत और यकीन के साथ अब जो फिर खुंबी का अर्क डाला तो फायदा हुआ।

क़ुव्वते बाह पर ख़यालात का असर

बाज़ लोग हस्तमैथुन (जलक) या समलिंगी (इग़लाम) के नुकसान न जानने के कारण नौजवानी में इन गलत कामों में मुबतिला रहकर अपनी नौजवानी की ताक़त को पूरी तरह बर्बाद कर चुकने के बाद जब होश आता है। और हस्त मैथुन व समलिंगी के नुकसान से परिचित होते हैं। उस समय अपनी हालत पर ध्यान देकर जब वह अपनी इन्द्रियों (आजा) में कमजोरी महसूस करते हैं तब निराशा पैदा हो जाती है और उनके दिल में यह ख्याल अच्छी तरह जम जाता है कि अब वह स्त्री से संगत के काबिल नहीं रहे हैं। अत: वह शादी करने को तैयार नहीं होते मगर घर वालों की इच्छा व तकाज़े और दोस्तों के समझाने बुझाने पर शादी के लिए तैयार हो जाते हैं तो वह खुद या अपने दोस्तों के ज़रिये इधर-उधर इलाज कराते हैं और हकीम डाक्टर भी उनकी इस मानसिक (ज़हनी) बीमारी को न समझ कर बहुत तेज़ और उत्तेजना पैदा करने वाली दवाएं और तिला स्तेमाल कराके उनको इत्मीनान दिला देते हैं कि अब तुम ठीक हो शौक से शादी करो चुनांचे वह शादी करके जब डरते-डरते बीवी के पास पहुंचते हैं तो दिल के अन्दर पैदा होने वालेडर का भूत उनको ले डूबता है हालांकि वह इस योग्य होते हैं और उनमें इतनी क्षमता होती है। दरअसल यह उस कुव्वते ख्याल का असर होता है जो उनके दिमाग पर मुसल्लत व काबिज होकर उनकी एहलियत (क्षमता) को सल्ब (निरस्त) कर देता है और उनमें निराशा व डर पैदा कर देता है। ऐसे लोगों को ऐसे मौके पर अपने बुरे ख्यालों पर काबू हासिल करना चाहिए और इस अवसर पर पसीने-पसीने हो जाने और दुल्हन के कमरे से निकल आने के बजाए अपनी हिम्मत कायम रखना चाहिए और अपनी रफीके

हयात (जीवन साथी) से उनसीयत पैदा करने की बातों में लग जाना चाहिए। उसकी तबियत का हाल पूछने उसकी पसन्द नापसन्द चीज़ों के बारे में जानकारी प्राप्त करने और आइन्दा ज़िन्दगी गुज़ारने की बातों व अपनी आदतों अपनी पसन्द नापसन्द चीज़ों से उसको वाकिफ़ (अवगत) कराने में गुजार देना चाहिए इस तरह हिम्मत के साथ जमे रहें तो वह ताकत और क्षमता जो आरजी Temperay (अस्थाई) तौर पर डर से दब गई थी फिर बहाल हो जाती है और काम बन जाता है। बस इसका ख्याल रहे कि चेहरे बुशरे (भेदभाव) से अपनी कमज़ोरी का ज़रा भी पता न चलने पाए। अगले दिन ज़रूरत हो तो किसी हकीम व डाक्टर से मश्विरा कर लें इन्शा अल्लाह कुव्वत बहाल हो जाएगी।

एक ग़लत फ़हमी (भ्रम) का समाधान

जाहिल व कम पढ़े लिखे खानदानों में कुंवारी दुल्हन के साथ पहली संगत में खून आना ज़रूरी समझा जाता है। और इस बात को मालूम करने के लिए चोरी छिपे कपड़े देखने की कोशिश की जाती है। और अगर यह पता चल जाए कि खून नहीं आया था। तो फिर औरत के बाइस्मत (पाक दामन) होने पर शक किया जाता है। जो ज़िन्दगियों में कड़वाहट घोल देता है इसलिए यह ज़रूरी समझा कि इस पर भी कुछ रोशनी डाल दी जाए।

कुंवारी लड़कियों की योनि के मुंह पर एक पतली लुआबदार झिल्ली होती है जिसे परदये बुकारत HYMEN (सतीच्छद) कहते हैं इस पर्दे में एक सूराख होता है जिसके ज़रिये बालिग हो जाने पर माहवारी का खून आता है। तो यह पर्दा फटकर हमेशा के लिए खत्म हो जाता है। इस मौके पर औरत के

कुछ तकलीफ भी होती है और थोड़ा खून भी निकलता है।

कभी-कभी यह पर्दा किसी चोट या हादसे (एक्सीडेन्ट) के कारण या अपने आप भी नष्ट हो जाता है। और किसी-किसी औरत का यह पर्दा ऐसा लचकदार (FLEXIBLE) होता है कि संगत करने से न तो फटता है और न सम्भोग में कोई रुकावट पैदा करता है। और संगत के समय कोई खून भी नहीं आता है। और लाखों में किसी औरत का यह पर्दा इतना सख़्त होता है कि नश्तर (चाकू) लगवाने की ज़रूरत पड़ती है। अतः अगर किसी कुंवारी लड़की से पहली संगत के समय खून न आए तो इसके पाक दामन होने और कुंवारेपन पर शुबह (सन्देह) करना किसी भी सूरत में मुनासिब न होगा।

बांझ कौन ? मर्द या औरत

अगर मियां और बीवी दोनों ही तन्दुरुस्त हों तो आम तौर पर शादी के बाद दो साल के अन्दर पहला हमल ठहर जाता है। और अगर 4-5 साल बीत जाने पर भी हमल न ठहरे तो आम तौर पर औरत के बांझ होने का शुबह होने लगता है। कम पढ़े लिखे और ना समझ घरानों में घर की बड़ी बूढ़ी औरतें घरेलू दाईयों से इलाज कराती हैं और पढ़े लिखे खानदानों में लेडी डाक्टरों से इलाज कराती हैं। अगर उनके इलाज के बाद भी हमल न ठहरे तो फिर औरत को बांझ समझ लिया जाता है। और मर्द या खुद घर के लोग दूसरी शादी की बात करने लगते हैं जिससे उस औरत की ज़िन्दगी बेमज़ा हो जाती है। हालांकि कमी मर्दों में भी होती है और मर्द भी बांझ होते हैं। किसी भी देश की औरत हो अगर उसको माहवारी शुरु हो जाने पर हर माह निश्चित समय पर (28

दिन या 2-4 दिन घट बढ़कर) बगैर किसी तकलीफ़ के खून आता हो और कम से कम तीन दिन और ज़्यादा से ज़्यादा दस दिन जारी रहता हो तो ऐसी औरत को बांझ नहीं कहा जाएगा। अगर किसी औरत में शुरु में महीना आने की रफ़्तार सही थी बाद को कमी बेशी हो गई या दर्द व तकलीफ़ से खून आने लगा हो तो समझना चाहिए कि औरत की बच्चेदानी पर (सूजन) आ गई है या बच्चे दानी का मुंह फिर गया अथवा टेढ़ा हो गया है। या औरत को ल्यूकोरिया की बीमारी है या खून की बहुत कमी हो गई है या कोई और बाहरी कारण हो सकता है। तो इन सूरतों में गर्भ नहीं ठहरता है मगर यह सब इलाज से ठीक हो जाने वाली बातें हैं।

हमल ठहरने के लिए जहां औरत का ऊपर लिखे तरीके पर सेहतमन्द (स्वस्थ) होना ज़रूरी है। वहां मर्द के वीर्य (मनी) में उन शुक्राणु (जरसूमों) SPERMS का ताकतवर व काफी मात्रा में होना भी ज़रूरी है जिनके द्वारा गर्भ की स्थापना होती है इसका पता मर्द के वीर्य की जाँच से चलता है मर्द के एक पतन (इन्जाल) में करीब 5 सी0 सी0 मनी निकलना चाहिए और उसमें ज़िन्दा और ताक़तवर (शुक्राणु) कम न होने चाहिए। अगर उनमें 20 प्रतिशत कमी हो तो कोई फर्क नहीं पड़ता है। शुक्राणु बिल्कुल ही न हों या बहुत कम व कमजोर हों तो भी गर्भ न ठहर पाएगा।

अब अगर मर्द और औरत दोनों ही में ऊपर लिखी कोई खराबी न हो तो फिर इसे मालिक की मर्जी समझना चाहिए। इसके अलावा एक सूरत यह भी हो सकती है कि औरत के शरीर में वह काजफ (जरायु की) नालियां जिनके द्वारा औरत का OVA अण्डा बच्चेदानी तक पहुंचता है वह बन्द होती है ।

इस बात का पता केवल एक्सरे से ही चल सकता है। कभी-कभी यह कमियां मालिक की मर्जी से खुद ब खुद भी दूर होकर 40-42 साल की उम्र में भी बच्चा पैदा होते देखा है। अगर किसी मर्द के वीर्य में शुक्राणु बिल्कुल न हो तो उनका इलाज तो बहुत मुश्किल है। अलबत्ता कम और कमजोर शुक्राणु के लिए माजून आरद खुर्मा का इस्तेमाल मुफीद होगा। यह माजून यूनानी दवा खाने में तैयार करते हैं (हमदर्द दवा खाना आदि) रोग माही (दवा का नाम) भी मुफीद है किसी यूनानी हकीम के मश्विरे से इस्तेमाल करें।

हज़ारों में दो एक औरतें पैदाइशी (जन्म से) बांझ होती है उनको शुरु ही से माहवारी ना के बाराबर होती है। जरा सा खून या धब्बा आता है। उनकी बच्चे दानी बराये नाम (नाम मात्र) होती है।

आम तौर पर 40-45 साल हद 50 साल के बाद माहवारी बन्द हो जाए तो फिर बच्चा पैदा होने का सवाल ही नहीं पैदा होता।

नौजवानों की नसीहत के लिए

जलक (हस्तमैथुन) व इगलाम (समलिंगी) करने वालों की आप बीतियाँ

यह किताब छपने के बाद मेरे पास जो खत आ रहे हैं उनमें से अन्दाजा हुआ कि यह बीमारी पढ़ने वाले लड़कों में बहुत फैली हुई है इसलिए उनकी नसीहत के लिए कुछ खत यहां नकल कर रहा हूं।

(1) क्या अर्ज करूं शर्म के बोझ से दबा जा रहा हूं। सही दवा मिल

जाए इसलिए सही हाल लिखने पर मजबूर हूं। जलक व इग़लाम के जरिए अपने आप को पूरी तरह बर्बाद कर चुका हूं। पढ़ने पढ़ाने का काम है मगर दिमाग कमजोर कुव्वते हाफ़ज़ा जवाब दे चुकी है सर में दर्द चक्कर आते हैं नज़र कमजोर कानों में सायें-सायें की आवाजें आती हैं कोई नौजवान औरत सामने आ जाए तो दिल बुरी तरह धड़कने लगता है घर वाले शादी का तकाज़ा कर रहे हैं उन्हें किस तरह बताऊं कि अब मैं शादी के काबिल नहीं रहा आपकी किताब पढ़ कर दिल में उम्मीद की किरन पैदा हुई है खुदा के वास्ते मेरे लिए कोई दवा तजवीज़ फरमायें।

(2) काश मुझे चन्द साल पहले आपकी किताब पढ़ने को मिल गई होती तो मैं गुनाह और सेहत की बर्बादी से बच जाता। जलक़ व इग़लाम की कसरत ने जिस्म को कमज़ोर-दिमाग को बेकार और चेहरे को बेनूर बना दिया है बस खुदकुशी करने को जी चाहता है अब मैं सच्चे दिल से तौबा करके बड़ी उम्मीदों से यह खत लिख रहा हूं उम्मीद है कि आप मायूस न फ़रमायेंगे।

इस पुस्तक के पढ़ने वालों की जानकारी में यह बात लाना भी ज़रूरी समझता हूं कि आजकल एक ऐसे ज्मेज की बड़ी पब्लिसिटी की जा रही है कि स्त्री के गर्भ में लड़का है या लड़की। चुनांचे वह लोग जो लड़की नहीं चाहते हैं वह ABORTION करा देते हैं यानी हमल गिरवा देते हैं।

देहली में एक ऊंचे खानदान की स्त्री को जिसके लड़कियां ही लड़कियां थीं अपने गर्भ की जांच कराने पर बताया गया कि गर्भ में लड़की है चुनांचे उस स्त्री ने अपने पति की राय से गर्भपात कराने का फैसला कर लिया मगर किन्हीं

मजबूरियों से तुरन्त गर्भपात न करा सकीं यहां तक कि चार माह होने पर जब एबॉर्शन कराया तो गर्भ में लड़का निकला। तब उस औरत ने Test करने वाले डाक्टर पर कई लाख रुपये तावान का दावा किया जो अदालत से डिगरी हुआ। इस तरह के वाक़्यात और भी जगह हुए हैं।

बहैसियत मुसलमान हमारा इस बात पर पूरा यकीन है कि इन बातों का खुदा के सिवा किसी को पता नहीं कि मौत कब आएगी, कहां आएगी, बारिश कब होगी और यह कि औरत के हमल में लड़का है या लड़की।

*

परिवार नियोजन और गर्भपात

खानदानी मन्सूबाबन्दी के लिये ज़ब्ते तौलीद और इस्काते हमल परिवार नियोजन के प्रचार से अब सभी लोग बचने लगे हैं और गर्भ (हमल) रोक तरीके अपनाने लगे हैं बेहयाई इस दर्जे बढ़ गई है कि नई दुल्हनें भी बड़ी दीदा दिलेरी से कहती हैं डा० साहब इस बार हम को चमतपवक (महीना) नहीं आया कोई सफाई की दवा दे दीजिए अभी से हम औलाद के बन्धन में नहीं पड़ना चाहते हैं मगर मैं तो उनको यह समझा कर वापस कर देता हूं कि पहला हमल हरगिज़ न गिरवाना वर्ना आगे तुम औलाद को तरसोगी।

कुछ औरतें जिनके एक दो बच्चे हो चुके हैं वह आमदनी कम और खर्चा ज़्यादा का उज्र बताकर हमल गिराने की दवा मांगती हैं बाज़ वह मजबूर औरतें होती हैं जिनके लगातार 2-3 लड़कियां ही लड़कियां हो चुकी हैं उनके पति उनका हमल अन्देशे (डर) से गिरवाने को कहते हैं आइन्दा फिर लड़की हुई तो और परेशानी बढ़ेगी इस लिये कि आज कल मुस्लिम समाज में भी लड़की की शादी एक मसला बन गई है। कोई औरत आकर यह दुखड़ा सुनाती है कि हमारे लगातार 3 लड़की हो चुकी हैं और शौहर ने यह कह दिया कि अगर अब कि फिर लड़की हुई तो तलाक़ दे देंगे इसी तरह की बातें कह कर ज़्यादा बच्चों की पैदाइश को रोका जा रहा है उन लोगों का यह फेल शरीयत की रु से कैसा है यह बात तो मुफ्ती हज़रात ही बता सकते हैं मैं तो यह सिर्फ नुकसानात इजमालन बताना चाहता हूं जो मरने हमल (गर्भ रोक) तरीके व दवायें इस्तेमाल करने

वाली मरीज़ाओं के ज़रिये मेरी जानकारी में आये हैं।

बच्चों की पैदाइश रोकने व हमल से बचने के तरीके

1. अज़ल– यह तरीका तो पुराने ज़माने से लोगों में चला आ रहा है जो इसी किताब में पीछे लिखा जा चुका है।

इस तरीके में फ़ायदा तो यह है कि मर्द या औरत किसी को कोई बाहर की चीज़ स्तेमाल नहीं करना पड़ती है और संगत भी फितरी (प्राकृतिक) तरीके पर होती है यह तरीक़ा हर वक़्त और हर जगह आसानी से काम में लाया जा सकता है मगर नुक़सान इसमें यह है कि इस अधूरे मिलाप से औरत की पूर्ण तसल्ली नहीं होती है उसकी प्यास बाक़ी रहती है जिस से बाज़ ज़्यादा हस्सास और जज़बाती औरतें आसाबी तकलीफ़ मानसिक तनाव का शिकार हो जाती हैं। संगत के अन्त पर औरत की यह इच्छा होती है कि अभी 2-4 मिनट मर्द उससे अलैहदा न हो मगर मर्द एक दम उससे अलैहदा होकर अपना वीर्य बाहर गिरा देता है यह तरीक़ा औरत को बुरा महसूस होता है मगर वह हमल से बचने के लिये इसको बर्दाश्त कर लेती है। मर्द का वीर्य योनि में गिरने से एक तरफ़ तो औरत को लज़्ज़त महसूस होती है दूसरी तरफ़ लिंग की रगड़ से पेदा असरात का इन्दुमाल हो जाता है। औरत को भी पतन हो जाता है। जो Antiseptic दवाओं के असर से तुरन्त पता नहीं चलता मगर बाद को नुकसान खुलता है इस तरीके में भी कभी-कभी इन्जाल के पहले मर्द की मज़ी (मनी निकलने से

पहले जो चीज़ निकलती है) में मनी के ज़िन्दा कीड़े आ जाते हैं इसलिय यह तरीका भी 100 प्रतिशत सुरक्षित नहीं है।

2- कन्डूम (F.L.) या निरोध (रबड़ की थैली) का स्तेमाल:- इसका भी फ़ायदा है जो अज़ल का बताया गया है मगर इसमें भी ख़तरा रहता है अगर रबड़ फट जाये या उस में कोई सूराख़ हो तो रिसने लगते हैं जिस से वीर्य अन्दर पहुंच जाता है।

एक पंजाबी साहब जिनका मैं फैमिली डाक्टर हूं एक बार उनकी औरत ने सफाई की दवा मांगी। मुझे मालूम था कि वह साहब निरोध का स्तेमाल करते हैं इसलिये मैंने पूछा क्या साहब ने निरोध का स्तेमाल बन्द कर दिया है तो उसने भोलेपन से कह दिया कि जब वह निरोध लाते हैं और जिस जगह रखते हैं मैं वहां से हटा देती हूं दरअसल मुझे उसका स्तेमाल अच्छा नहीं लगता कभी-कभी निरोध की ख़राब रबड़ से भी स्त्री की योनि पर ख़राब असर पड़ता है।

3- मर्दाना आप्रेशन या नसबन्दी:- इस आप्रेशन में अन्डकोशों से मनी पहुंचाने वाली नसों को काटकर उनके सिरों को बांधकर फिर दुबारा शरीर में बन्द कर दिया जाता है इस तरह मर्द को बांझ बना दिया जाता है। इस तरीके की ख़राबी अभी तक हमारे सामने नहीं आई मगर ऐसा आप्रेशन कराने वालों को उस वक़्त तक बड़ी निराशा होती है जब औलाद मर जाये या दूसरी शादी करें और नई बीवी को बच्चे की इच्छा हो क्योंकि नसों को दुबारा जोड़ने का अमल ज़्यादा कामयाब नहीं है।

इस आप्रेशन के बाद भी मर्द को काफी अर्से तक सावधान रहना पड़ता

है आप्रेशन के समय जिस क़दर वीर्य शरीर था जब तक वह बिल्कुल समाप्त न हो जाये हमल ठैर सकता है इसलिये इस आप्रेशन के बाद भी मर्द को जांच कराते रहना चाहिये जब तक कीड़े बिल्कुल ख़त्म न हो जायें संगत से बचना या कोई और तरीका स्तेमाल करना चाहिये।

4– ज़नाना आप्रेशन:– औरतों को हमेशा के लिये बांझ बनाने का जो आप्रेशन किया जाता है उसे STERCISATION कहते हैं इस आप्रेशन में औरत की अन्डा पहुंचाने वाली नाली FELLOPIAN TUBES बीच से काट कर या दबाकर OVA के बच्चेदानी पहुंचने का रास्ता ही बन्द कर दिया जाता है जिससे औरत हमेशा के लिये बांझ हो जाती है

जो औरतें यह आप्रेशन कराती हैं उनमें ज़्यादातर औरतों का मासिक धर्म कुछ समय बाद बिगड़ जाता है किसी का कम और किसी का जल्दी बन्द हो जाता है जिससे उनका पेट बढ़ जाता है बदन भारी पड़ जाता है बदन में ज़्यादा गर्मी महसूस करती हैं मगर फिर भी वह ख़ुश रहती हैं कि गर्भ की तकलीफ़ और बच्चा पालने की मुसीबत से उनको छुटकारा मिल गया।

5. योनि के अन्दर की रुकावटें :– हमल रोकने के लिये एक तरीक़ा बच्चेदानी के मुंह को बन्द करने के लिये लूप कैप-डाया फ़ाम-पैसरी-कोपरटी-कोपर सैलिन आदि के बच्चेदानी में फ़िट करा लेना है जो कोई बहुत होशियार व तजरबेकार डाक्टरनी ही ठीक तरीके से फ़िट कर सकती है ना तजरबेकार के हाथों फ़िट कराने में औरत को तकलीफ़ भी होती है और कभी-कभी वह निकल जाते हैं। इस तरीके में कभी-कभी बच्चेदानी में इन्फेक्शन

पैदा हो सकता है महीने में ज़्यादती, सूजन आदि दूसरी परेशानी सामने आ सकती है कि बच्चेदानी एक कोमल अंग है बाहरी चीज़ों को बरदाश्त नहीं करता।

6- बच्चेदानी के अन्दर दवाओं का स्तेमाल:- ऊपर लिखी कुछ तदबीरों के अलावा कुछ चीज़ों का संमत के समय स्तेमाल किया जाता है कई तरह की क्रीमें-जैली, झाग पैदा करने वाली गोलियां योनि में पहुंचाना और संगत के बाद डूश बच्चेदानी की धुलाई कर लेना है इन सबके इस्तेमाल में रुपये का खर्च भी ज़्यादा है। दवा अन्दर पहुंचाने वाली सिरंज का साफ़ करके रखना और समझदार बच्चों वाले घर में इन चीज़ों को छुपाकर रखना बड़ा मुश्किल काम है और इन चीज़ों से संगत का मज़ा कम हो जाता है।

7- गर्भ रोक गोलियां:- इन हारमोन से बनाई गई गोलियों के स्तेमाल से औरत के शरीर में OVA का पैदा होना बन्द हो जाता है। यह गोलियां सौ प्रतिशत सफल बताई जाती हैं इनके इस्तेमाल से कुछ औरतों की छाती सूखने लगी और मूछों की जगह बाल उग आने की शिकायत मिली। यह गालियां हर औरत स्तैमाल भी नहीं कर सकती-हाई ब्लड प्रेशर, थुरोमबोसिस, मधुमेह (शुगर) या पीलिया रोग वाली या तम्बाकू खाने वाली, या जिन को कभी दिल का दौरा पड़ चुका हो उनको इसका स्तैमाल मना है।

8- गर्भ रोक टीके- INJECTIONS जिन को शोट SHOT कहा जाता है यह भी गर्भ रोक गोलियों की तरह काम करते हैं एक टीका तीन माह के लिये दुगना लिया जाये तो छः माह तक कारगर रहता है मगर यह भी नुकसान से खाली नहीं। दो साल लगातार टीके स्तैमाल करने से

40 फीसदी औरतों को मासिक धर्म (हैज़) वक़्त से पहले बन्द हो जाता है। जिससे दूसरे किस्म की परेशानी सामने आ सकती है।

9- हमल ठहरने के बाद उसकी सफाई:- जिसको डी. एन. सी. कहा जाता है यह तो सब से ज़्यादा नुक़सान पहुंचाने वाला तरीक़ा है। जब औरतों को हमल का यक़ीन या शुबहा होता है तो वह डाक्टर या कैमिस्ट के पास जाती हैं जो पहले उन को Pregnancy Test दवा देता है जो गर्भ की सफाई का काम करती हैं अगर यह फेल हो जाये तो डाक्टर सफाई ज़रूरी बताता है क्योंकि इस दवा के स्तैमाल से हमल में जो बच्चा है उस पर ख़राब असर पड़ता है चूंकि इस तरीक़ा D.N.C. में औज़ारों का स्तैमाल होता है इसलिये बच्चेदानी में ख़राश या ज़ख़्म हो जाना सम्भव है। इसके अलावा कभी-2 डाक्टरनी की नातजरबेकारी या जल्द बाज़ी में गर्भ का कोई हिस्सा झिल्ली आदि रह जाती है जिससे ख़ून बन्द नहीं होता और कभी-2 दुबारा सफाई की ज़रूरत पड़ती है। मेरे पास ऐसे बहुत से केस आये जिनमें सफाई के बाद ख़ून बन्द नहीं हो रहा था और मैंने सिर्फ हाल सुनकर बता दिया कि पूरी सफाई नहीं हुई है। मेरे दवा देने पर गर्भ का बचा हुआ हिस्सा निकल गया और ख़ून बन्द हो गया मैं ऐसे मौक़े पर Cantheris IX और Pyroginum 200 और एहतियात के तौर पर ARNICA IM देता हूं।

सारी बातों का खुलासा यह है कि इस वक़्त गर्भ रोकने के जो तरीक़े चालू हैं उन सब में कुछ न कुछ कमी ज़रूर है और जब से यह तरीक़े चालू हुये हैं औरतों की बच्चेदानी में TUMER और कैंसर के केस बहुत बढ़ गये हैं।

आयुर्वेदिक और यूनानी इलाज में जो गर्भ रोकने के स्वस्थ तरीके हैं वह मैं इन्शाअल्लाह आदाबे मुबाशिरत के अगले भाग औरतों के जिंसी मसाइल में लिखूंगा। होम्योपैथिक दवायें इसी किताब में पीछे लिख चुका हूं उसमें इतना और बढ़ा लें कि अगर किसी औरत को महीना निश्चित तारीख पर न हो तो वह तुरन्त PULSATILA CM की एक खुराक खाले 95 प्रतिशत कामयाब है ज्यादा समय हो जाने पर इसका स्तैमाल बेकार होगा।

*